प्रेम का विषाद

(द सारो आव लव)

सध्या वेला मे गौरैयो के कलरव ने,
पूर्ण चन्द्र ने, पूरी आकाशी गगा ने,
सामजस्य-स्वरो मे वृक्षो के मर-मर ने
मानव की प्रतिमा विलुप्त कर दी थी,
मानव की पुकार भी।

उठी तरुण बाला जिसके थे अधर गुलाबी और मानसी–
एक बूद आसू मे स्मृति की विराटता सिमटी मानो—
भाग्य महानाविक का ले,
जा बेडा लेकर क्षुब्ध समुद्रो की यात्रा को निकल पडा हो
स्वाभिमान उस परम वीर का ले,
जो अपने अभय साथियो के सँग समर मे जूझा हो।

उठी, और उसके उठते ही कलरव-सध्या,
शून्य गगन मे चढते चदा,
वृक्षो के अवसाद भरे हर-हर, मर-मर ने
मानव की प्रतिमा प्रस्थापित कर दी
मानव की पुकार भी।

जब तुम बूढ़ी होना

(ह्वेन यू आर ओल्ड)

जब तुम होना बूढ़ी सन-से बालों वाली
जिसकी आँखों में अँधियाली,
शीश हिलाती बैठ अँगीठी के आगे तुम
इस पुस्तक को लेना, धीरे-धीरे पढ़ना
और सोचना कभी तुम्हारी आँखें कितनी नम-नम थीं,
अपनी पलकों की छाया में कितने गहरे मर्म छिपाए,

कितने ही थे जिन्हें तुम्हारे आनन की
प्रसन्न मुद्रा के क्षण प्यारे थे
कितने थे बलिहार तुम्हारी सुंदरता पर
झूठा-सच्चा प्यार दिखाकर
किंतु एक था जिसने तुमको प्यार किया था
तुममें अपने प्राणों का सहयात्री पाकर,
और तुम्हारे परिवर्तित होते मुख पर
चित्रित विषाद को प्यार किया था,

और दहकते अंगारों के निकट झुकाकर आँखें
कहना अस्फुट स्वर में, भारी मन से
हाय, प्यार कितनी जल्दी जीवन से भागा
दिखा सामने पर्वत की चोटी पर चढ़ते
और छिपाते अपना मुँह तारावलियों में ।

रजत पक्षी
(द ह्वाइट बर्ड्स)

मेरी प्रेयसि ! काश रजत पक्षी हम होते
और तरते फेनिल सागर की लहरों पर !
हम उल्काओं की लपटों से घबराए हैं,
हाय, न जाने कब वे बुझकर गायब होंगी।

अंबर में छिटकी लाली में नील सितारे ने
जो किरणें फैलाई हैं
लटक क्षितिज को वे छूती हैं,
और उन्होंने, मेरी प्रेयसि, मेरे और तुम्हारे अंतर में
ऐसा अवसाद जगाया है जो शांत नहीं होने का।

ओस बिंदु से लदी कुमुदिनी औ' गुलाब की
स्वप्निल पंखुरियों से तंद्रा टपक रही है,
मेरी प्रेयसि, ध्यान करो मत उन उल्काओं की
लपटों का जो कि गगन में चलती जातीं,
नील सितारे की किरणों का,
जो कि ओस की गिरती बूंदों में नीचे को लटक गई हैं,
क्योंकि चाहता हूँ तुम औ' मैं
रजत-पक्षियों में परिवर्तित
फेन-लहर पर तिरते फिरते।

मेरी आशा में कितने ही द्वीप घूमते,
फेन-लहर से धुलते कितने सिंधु किनारे,
समय जहा पर निश्चय हमको बिसरा देगा,
और हमारे पास विषाद न आ पाएगा,
जहा कुमुदिनी औ' गुलाब के अश्रु न होंगे,
और न उल्का, नील सितारे की
अवसाद जगानेवाली लपटें किरण !
मेरी प्रेयसि, काश वहा पर, फेनिल सागर की लहरों पर
भूला हम-तुम भूला करते, रजत पखेरू-जोड़ा बनकर !

वृद्ध पेशनर का विलाप

(द लेमेंटेशन आफ द ओल्ड पेंशनर)

अब दिन ऐसा
टूट पेड तले हो रुक के खडे
बचाता हूँ अपने का मैं वर्षा से,
किंतु किसी दिन
सबसे आगे, निकट अँगीठी के
मेरा आसन होता था, दूर बैठक मे
जिसमे चर्चाएँ चलती थी राजनीति पर
या कि प्रीति पर,
हाय, समय ने अब तो मेरी शक्ल बदल दी।

नौजवान षड्यन्त्र खडा करने की
तैयारी मे शस्त्र इकट्ठे करते चोरी चोरी,
युवक सिरफिरे कुछ
मानव-अत्याचारो पर आखें लाल निकाल रहे है,
मैं निसूरता बैठा हूँ उस गए समय को
जिसने मेरी शक्ल बदल दी।

टूट तरु की ओर उठाकर आख
नही कोई भी औरत देखा करती,
फिर भी जिन परियो को मैंने प्यार किया था,
उनकी शक्लें सुधि म बसती,
जी म आता है कि समय के मुह पर थूकू
जिसने मेरी शक्ल बदल दी।

चित्त-वृत्तियाँ
(द मूड्स)

पूरी जली मोमबत्ती-सा
खडा काल प्रभहीन पडा है,
और बडे वन-पर्वत भी तो
काल-बद्ध है काल-बद्ध हैं,
अगर अग्नि-सजात वत्तियो के
सामूहिक महा ध्वस मे
कोई छोटी एक गिरी औ नष्ट हो गई
तो क्या ? तो क्या ?

प्रेमी कहता है कि उसके दिल मे एक गुलाब है

(द लवर टेल्स आव द रोज इन हिज हार्ट)

वे सब चीजें जो बदसूरत है, टूटी है,
वे सब चीजे सडी-गली जो, घिसी पिटी जो,
गली किनारे खडे हुए बच्चे का रोदन,
कूडा ढोती भसा-गाडी की चूँ-चर-मर,
कीचड छिटकाते किसान के कदम गँवारी,
भद्दे-भारी—

ये सब के सब
अत्याचार तुम्हारी सूरत के प्रति करते
जो गुलाब सी खिली हुई है मेरे दिल की गहराई मे।

बेढगी चीजो का अत्याचार
बडा इतना है शब्द नही कह पाते,
नये सिरे से उन्हे बनाने को मैं पागल
अलग एक मरकत-टीले पर जा बैठा हूँ,
जल-थल-नभ नव-निर्मित करके
मैंने सोने की मजूषा मे रक्खा है,
क्योकि तुम्हारी सूरत जो मेरे सपनो की,
वह गुलाब-सी खिली हुई है मेरे दिल की गहराई मे।

मछली

(द क्रिश)

भने छिपा तुम,
चद्र जन्त जब हो जाना है,
ज्वार और भाट की पीत बरन लहरा मे,
आनवाले दिन के लागो से
        यह वात छिपी न रहेगी,
तुम पर मैंने जपना जाल कभी डाला था।

जौ' किननी ही वार
रेशमी रजन-डोरिया को
        फनागनर निकल गइ तुम।
व साचेंगे, तुम कठार थी, तुम निदय थी
नौ कितने ही कटु शब्दा म
        वे तुम पर ताहमत थापेंगे।

बूढ़ी माँ का गीत

(द सॉंग आव द ओल्ड मदर)

मैं तड़के उठती हूँ,
झुककर चिनगारी पर फूँक लगाती
बीज अग्नि का दहक न जब तक
लाल-लाल अंगारा बनता।
जब तक फर्श रगड़ती, झाड़ू देती,
केक पकाती हूँ मैं,
अंबर में तारे पलकें झपकाने लगते।

बहुएँ देर तलक बिस्तर में सोती रहतीं
स्वप्न देखतीं कैसा फीता
चाँदी-चोटी में सोहेगा,
दिन उनका नखरों में गुजरा करता है,
एक हवा के झोंके ने उनके क्या बिसुरी,
उनको आह भरने का सामान मिल गया,
लेकिन मैं बूढ़ी हूँ ना मैं काम करूँगी,
यदि न करूँ तो
बीज अग्नि का गुलरंग ठंडा हो जाएगा।

नारी का हृदय

(द हार्ट आव द वुमन)

क्या परवाह मुझे है उस छोटे कमरे की
जहां प्रार्थना की जाती थी
जहां बड़ा आराम मुझे था
उसने मुझको अंधकार से किया इशारा
औ' अब मेरी छाती उसकी छाती पर है।

क्या परवाह मुझे है मां की दुख-रख की
या उस घर की जहां सुरक्षा थी
सुभास था,
मेरी अलकावलि की पखुड़ियों की छाया
बचा सकेगी हमको भीषण तूफानों से।

हमें छिपा लेनेवाली ओ अलकावलियां
ओ मेरे रस भीगे नयनो !
जीवन और मरण की सीमाओं को अब मैं
पार कर गई
मेरी छाती में उसकी छाती की धड़कन
समा गई मेरी सांस उसकी सांसों में !

सहेली की विदा

(द लवर मोर्न्स फार द लास आव लव)

सुंदर मुझको मिली सहेली
वासंती भ्रू और अचचल छाया वाली,
भूरे-भूरे बालों वाली,
मैंने की कल्पना अततोगत्वा मेरी
पूर्व निराशा सफल प्रेम में परिणत होगी।
एक दिवस उसने मेरे अन्तर में झाका,
देखा वहाँ तुम्हारी प्रतिमा प्रस्थापित है,
और सहेली मेरी मुझसे विदा हो गई
रोती-रोती।

प्रेयसी के लिए कुछ पक्तियाँ
(ही गिन्स हिज़ विलयड सरटन राइम्स)

एक सुनहरी पिन से अपन बाल बिठाला
और वाध लो हर विखरी लट,
मेर दीन हृदय ने यह तुकबदी की है,
कितने दिन, कितनी रातों तक
उसन इसपर काम किया है,
तव अवसाद भरी सुषमा का सृजन हुआ है,
पूर्वकाल के युद्धा के ध्वसावशेष से।

तुम्हें सिफ अपने मोती से पीले पीले हाथ उठाना,
औ' अपने लबे बाला का बाध एक उच्छवास छोडना,
सब पुरुपा के दिल मे धडकन हागी
ज्वाला भभक उठेगी।

भूरी बालू के तट को
फिर फिर धाती फेनोज्ज्वल लहरें,
ओम चुआते नभ मे ऊपर चढते तार
इसीलिए ह,
जहा कही भी चरण तुम्हार पडें
करें पथ मे उजियाला।

प्रेमियों की घाटी

(ही टल्स आर न वेली फुल आफ लवर्स)

मैंने देखा स्वप्न, खड़ा हूँ मैं घाटी में
आह चारों ओर उठ रही,
क्योंकि प्रेयसी औ' प्रियतम के सुखमय जोड़े,
जहाँ खड़ा हूँ पास उसी के, गुज़र रहे हैं।
और स्वप्न में ही मैंने यह देखा
मेरी पूर्व प्रेयसी
दबे पाँव वन से निकली है—
बादल-सी पीली पलकों के नीचे
स्वप्न-गगन सी नीली-नीली आँखें।

औ' मैं सपने में चिल्लाया,
ओ प्रेयसियो, अपने प्रेमी युवकों से कह दो
वे अपने शीश तुम्हारे घुटनों में अविरत कुराएँ
औ' तुम उनकी आँखें ढँक दो
अपनी घन अलकावलियों में,
क्योंकि प्रेयसी मेरी उनको ध्यान दिला देगी
और मुखड़ा उन्हें न सुंदर जान पड़ेगा
ध्यान भले वे डालें सब घाटियाँ जान की!

अनिद्य सौंदर्य

(हीं टेल्स आव द परफेक्ट ब्यूटी)

आ, बादल-सी पीली पलक,
　　　　स्वप्न गगन सी नीली आखें !
अपने छंदों में अनिद्य मादय
　　　　　　मूत करने की धुन में
श्रम रात दिन करनेवाले कविगण
सहज पराजित होते
नारी की चितवन से
नभ म निष्प्रयास चलते उडगण से ।
इसीलिए मेरा अभ्यंतर झुका रहेगा
　　　　प्रभु के द्वारे काल क्षय तक
क्योंकि ओस की बूंदें तद्विल टपक रही है
निष्प्रयास चलते तारों के आगे
　　　　　और तुम्हारे आगे ।

प्रेयसी के निंदक
(हो थिन्न भान दोज़ हू हैव स्पोकेन इविल आव हिज़ बिलवेड)

आखो पर पलको को आधी झुकी हुई रख
अपनी अलकावली खोल दो,
औ' सोचो जो बडे कहे जाते हैं
वे कितने दभी हैं,
और उन्होंने सभी जगह पर, प्राण,
विरुद्ध तुम्हारे कितना विष उगला है!
लेकिन तुम यह गीत एक पलडे मे रखना
और दूसरे मे उनका जो वडे कहे जाते है
उनके बडे दभ को,
और देखना किधर वज़न भारी पडता है।
अपनी एक आह मे मैंने गीत रचा यह,
उनके बच्चो के बच्चे जब इसे पढेगे, यही कहेगे
झूठ बक गए कितना उनके बूढे दादे!

पुराने मीतो को न भुलाने की प्रार्थना

(द लवर प्लीड्स विद हिज फ्रेंड फार ओल्ड फ्रेंड्स)

माना मैंने, प्राण,
तुम्हारे लिए आज दिन शानदार है,
जनता से उठकर आवाज, नये मित्रगण
नित्य तुम्हारा अभिनदन करते रहते है
मत अनुदार बनो, मत गव करो तुम इसपर
सबसे ज्यादा प्राण, पुराने मीतो के बारे म साचो।
क्रूर समय की बाढ किसी दिन आएगी ही,
और तुम्हारी सब सु दरता साथ बहाकर ले जाएगी,
सब आखो मे,
किंतु न उनम शामिल हागी मेरी आखे।

काश प्रेयसी मर गई होती

(ही विशेज हिज़ विलवेड वर डेड)

अगर पड़ी तुम होती मरकर, ठंडी होकर,
औ' प्रकाश पच्छिम में पीला पडकर
गायब होता जाता,
तुम आती इस ठौर और निज शीश झुकाती,
और तुम्हारी छाती के ऊपर मैं अपना सिर धर देता।
तुम अस्फुट स्वर में कुछ मीठे शब्द बोलती,
क्षमा मुझे कर देती, क्योंकि मरी तुम होती।
यद्यपि तुममें वन्य पक्षियों का इच्छा-बल,
तुम न भागती उठ जल्दी में,
किंतु समझती लटें तुम्हारी
सूरज, चांद, सितारों के सँग उलझी-पुलझी,
प्रेयसि, काश कफन ओढ़े तुम
गड़ी हुई धरती में होती,
औ' पच्छिम में
एक एक कर, पीले पडकर नभ के तारे बुझते जाते!

धैर्य बँधाने की निरर्थकता

(द फाली श्राव चीग कम्फर्टेड)

जो कृपालु मुझपर सवदा रहा करते हैं
कहा उन्होंने कल यह मुझसे,
'सुनो, तुम्हारी प्राण प्रियतमा के सिर पर अब
कोई-कोई बाल सफेद नजर आते हैं,
औ' आखो के नीचे थोडी थोडी झाड
पडती जाती।
समय सिखा ही देता है सब कुछ सह जाना,
गो यह तुमको अभी असभव जान पटेगा,
इस कारण तुमको केवल धीरज रखना है।'
मेरा अतर नदन करता,
'नही, मुझे रत्ती भर, कण भर भय नहीं है,
समय उसे फिर से सुदरता दे ही सकता,
क्योकि ओज की वह प्रतिमा है,
उसके अदर एक आग है,
जब वह चलती, उसके चारो ओर मचलती
औ' तेजी के साथ भभकती।
तेज कहा था तब ऐसा उसकी आखो मे
जब वसत की सारी मादकता उनसे
झाका करती थी।

ओ मेरे मन ! ओ मेरे मन ! एक बार वह
अपने सिर को झटका भर दे,
तू जानेगा, उनके धय बँधाने का कुछ अर्थ नही है।

पुरानी याद

(ओल्ड मेमोरी)

अरी कल्पने, जब दिवसात पुरानी यादें
जाग्रत करता, उड जा उसके पास और कह,
'शक्ति तुम्हारी वज्र-कठोर, कुसुम-कोमल है,
वह उठान है उसम जिसमे एक नए युग
का आरभ किया जा सकता, जिसमे आएं
याद रानिया जिनका कल्पित किया गया था
धुर अतीत मे, पर यह आधी शक्ति तुम्हारी।
यौवन के लव वर्षों मे उसन अपना
हृदय मथा था, किसन समझा था वह सारा,
औ' कुछ उस सबसे ज्यादा भी, व्यथ जायगा,
और प्यार के शब्दो म कुछ अथ न होगा।'
इतना काफी, तभी प्यार का दोषी हम
ठहरा सकत है,
जबकि हवा का पहले हम दोषी ठहरा दें।
और, अगर, कुछ कहन की आवश्यकता हो,
तो भी कहना नही चाहिए,
क्रूर बहुत होगा ऐसा उन बच्चो क प्रति
जो अनजाने बहक गए ह।

पूरे दिल से प्यार न करना

(नेवर गिव आल द हार्ट)

प्यार कभी मत अपने पूरे दिल से करना,
प्रमदाएँ परवाह न करती तिनके भर भी
उस प्रेमी की जो उनके प्रति पूर्ण समर्पित,
वे न सोचती सपने मे भी, पहले चुबन
और दूसरे मे आकर्षण घट जाता है—
क्योकि जगत मे जितनी भी चीजे प्यारी है
क्षणभगुर है, स्वप्नमयी हैं,
एक मद मुसकान समय की।

यारो, अपने पूरे दिल को दे न बैठना,
ये सब कोमल अधरो वाली बतलाएँगी,
वे उसको दिल देती जो उनके सँग खेले,
और खूब खेले जो उनसे, कोई ऐसा हो सकता है
जो कि प्यार मे अधा, गूँगा हो, बहरा हो?
जो यह कहता, उसने इसका मूल्य चुकाया,
क्योकि दिया दिल पूरा उसने, पर क्या पाया?

नगी डाले
(द निदरिंग आव द बाउज़)

अस्फुट स्वर मे चाद कह रहा था
जब सुप्त वन की चिडिया मे मैं चिल्लाया,
'जहाँ कहीं भी चाह टिट्टिभ वान,
कुररी शोर मचाए
मैं व्याकुल हूँ, मधुर करुण, सुकुमार तुम्हारे
गद पद मेरे कानो मे,
क्योकि रास्ते अन्तरहित है
मेरे मन के लिए कहीं पर जगह नहीं है।
पीला चाद किनारे पवन पर लेटा था
मैं भी सोया एकाकी जलधार किनारे।
शीत समीरण के चलने से
डालें नंगी नहीं हुई हैं,
डालें नगी हुईं कि उनको
मैंने अपना स्वप्न सुनाया।

जान मुझे वन-पथ भुतनिया जिनमे आती,
निर्जन झील की गहराई से
सिर के ऊपर मुक्ताओं का ताज सँवार,
ऊन कातन का तकला हाथो मे लेकर,
अधरों पर मुसकानें, जिनका भेद न सुनना।

ज्ञात मुझे घाटिया कि जिनमे चदा ढलता
परिया जिनम सीधे-उरट चक्कर देकर
नतन करती जबकि चादनी मद्धम पडती ।
ज्ञान मुझे ह द्वीपा के तट
पीली पीली फेन-लहरिया जिनका धोती,
जिनमे परिया पाव भिगाती ।
शीत समीरण के चलने स
डालें नगी नहीं हुई हैं,
डालें नंगी हुई कि उनको
मैंने अपना स्वप्न सुनाया ।

ज्ञात मुझे ह देश जिदारे जहा सुनहरी
जजीरा से बँधे हुए हसा के जाडे
चक्कर देकर उडते, उडते गाते जाते ।
एक वहा पर रानी-राजा घूम रहे है,
हस-गीत ने इतना उनका
हर्पित और हताश किया है,
वे अधे ह वे बहरे है
हस गीत ने इतना उनका ज्ञान दिया है ।
उसी जगह वे घूम रह ह,
और बरस दर बरस गुजरते चले गए है ।
मुझको है यह ज्ञात, ज्ञात यह टिट्टिभ को भी,
कुररी को भी, जा बसने जलधार किनारे ।
शीत समीरण के चलने से
डालें नगी नहीं हुई हैं,
डालें नगी हुई कि उनको
मैंने अपना स्वप्न सुनाया ।

आदम का शाप
(ऐडम्स कर्स)

ग्रीष्म समाप्त हुआ था, हम तीनो बैठे थे—
वह सुंदर-सुकुमारी नारी, मित्र तुम्हारी,
औ' तुम औ' मैं—कविता की चर्चा करते थे।
मैं बोला था, 'एक पंक्ति लिखने मे घंटा

लग सकते हैं,
फिर भी यदि वह क्षण मे उतरी हुई न लगती
शब्दो की वह सब उधेड-बुन बेमतलब है।

इससे तो यह अच्छा होगा, कमर झुकाए
फर्श रसोई का रगडे या पत्थर तोडे
जो हर दिन बूढ़ मजदूर किया करते है।
मीठी ध्वनिया साथ मिलाकर मुखरित करना
इन सब कामो से मुश्किल है, फिर भी इसको
स्कूल मास्टर और बैंकर और पादरी—
शोर मचानेवाले सारे—जिनको सतो
के शब्दो मे दुनियादार कहा जाता है—
बेकारो का धधा कहते।'

इसके ऊपर
वह सुंदर-सुकुमारी नारी जिसकी खातिर
बहुत मिलेंगे, दिल मे सारा दर्द जमा लें,
और जान लें उनकी वाणी मद-मधुर है,
बोली, 'औरत होकर ही यह जाना जाता
यद्यपि इसका कहीं कही कोई सिखलाता,
हमको सुन्दर बनने को श्रम करना पडता।'
मैं बोला, पतन हुआ जब से आदम का

कोई अच्छी चीज नही है
जिसे न मेहनत करनी पडती।
ऐसे भी प्रेमी इस दुनिया मे गुजरे ह
जो कि प्रेम को उच्च कोटि का
ऐसा शिष्टाचार बनाने के हामी थे,
आह भी ले तो वे दीग विद्वाना-से
औ' वे इसके लिए मिसालें पेश कर सक
सुदर और पुराने ग्रथा के पन्ना मे ,
लेकिन अब ऐसा लगता हे
यह बेकारा का सौदा है।'

नाम प्रेम का आते ही हम चुप हो बठे,
हमने देखा दिन की लाली डूब गई है
और गगन के मरकत-नीलम के कपन मे
चाद उगा है, जसे कोई सीप खियाया ,
तारा-से द्वीपो के चारा ओर मचलती
जिसे, समय की लहरो ने उठ उठ, गिर गिरकर
इतना धोया है इतन दिन, इतन साला,
वह बेचारा टूट गया हे।

म कुछ कहना चाह रहा था
जिसे सुन सक, प्रेयसि, केवल कान तुम्हारे
तुम सुदर हो औ' मने यह कोशिश की थी
प्यार कर सकूँ तुम्ह पुरानी उच्चकोटि की
प्रीति-रीति से,

जिसमे सारा कुछ शोभन हो ,
फिर भी आज हमारे दिल टूटे-हारे ह
जसे यह खोखला चाद है
जिसपर करते व्यग्य गगन के ये तारे हैं।

बूढ़ों से सुनी

(द ओल्ड मेन ऐडमायरिंग देमसेल्व्स इन द वाटर)

मैंने बूढ़े, बहुत पुराने लोगों से यह
सुन रक्खी है,
'दुनिया फानी,
या हर चीज़ बदल जाती है,
एक-एक कर, बाबा, सब के
जाने की बारी आती है।'
उनके हाथ नहीं थे, पंजे,
उनके घुटने मुड़े मरोड़े,
जैसे काई काँट वाला पेड़ पुराना
नदी किनारे,
सिर पे गंजे।
मैंने बूढ़े, बहुत पुराने लोगों से यह
सुन रक्खी है,
'दुनिया फानी,
सुंदर से सुंदर भी ऐसे बह जाता है
जैसे पानी।'

बीहड़ वन
(द रैगेड वुड)

आओ जल्दी चलें जहा पर वीहड़ वन है
झील किनार,
जिसमें मद-चरण मृग, उसकी मगी सहेली
आह भरते,
जब पानी के अदर अपनी परछाइ के
देखा करते—
काश छोडकर हमको - तुमको
जग मे कोई प्यार न करता।

जब सूरज उठ अपने सुवरन मुख मडल से
झाका करता,
तब अवर की चद्रमुखी रानी, अभिमानी,
जिसके तन से कचन झरता,
रजत चरण की, नभ मे तिरती, कभी सुना है,
क्या है कहती—
काश, छोडकर हमको-तुमको
जग मे कोई प्यार न करता।

आओ जल्दी चलें जहा पर वीहड वन है
झील किनार,

और किसी प्रेमी को रहने वहाँ न दूँगा,
                    चिल्लाऊँगा माथ-मरारे—
विश्व विभव मेरे हिस्से की, कंचन-केशी,
                    तुमने मुझको क्या न दिया है,
                    हमको-तुमको छोड़ किसी ने
                    कभी न जग में प्यार किया है।

ज्यादा दिन मत नेह लगाना

(ओ डू नाट लव टू लाँग)

प्राण प्रियतमे, ज्यादा दिन मत नेह लगाना,
ज्यादा दिन तक नेह लगाकर मैंने सीखा है पछताना,
मैं ऐसा बे फैशन का माना जाता हूँ
जैसे कोई गीत पुराना।

एक इस तरह थे हम यौवन के वर्षों में—
हाय, कहाँ वह गया जमाना—
क्या उसके मन, क्या मेरे मन,
हमें असंभव था अलगाना।

लेकिन पल में बदल गई वह—
ज्यादा दिन मत नेह लगाना,
वरना तुम भी हो जाओगे बे-फैशन के,
जैसे कोई गीत पुराना।

नारी जिसका गीत वृद्ध होमर ने गाया

(अ वुमन होमर सग)

जब जवान था
तब यदि उसके पास चला कोई आता था,
मैं सोचा करता था, 'प्यार उसे करता है,'
और घृणा से, भय से कंपित हो जाता था,
किंतु निकट से उसके कोई
बिना प्रभावित हुए गया तो
यह लगता था जैसे उसकी हुई उपेक्षा।

उस पर मैं लिखता था, रचनाएँ करता था,
और आज ढल चली उमर है,
अब मैं सोचा करता हूँ, अपने विचार को
मैंने इतनी गहराई तक पहुँचाया है,
आनेवाला समय कहेगा,
'बिंबित है उसके दर्पण मे
जैसी थी वह तन मे, मन मे।'

जब जवान था
उसके लोहू मे अंगारे की गर्मी थी,
सहज गर्व से जब वह चलती थी लगता था
जसे बादल पर चलती हो,
जैसे वह नारी हो जिसका गीत
वृद्ध होमर ने गाया,
जिसे देखकर जीवन औ' साहित्य लगा था
जसे वह भ्रम-स्वप्न-समाया।

शब्द

(वर्ड्स)

क्षण भर पहले यह विचार मन में आया था
'मेरी प्यारी समझ न सकती
मैंने जो कुछ किया, करूँगा
इस अंध विक्षुब्ध देश में।'

घड़ियाँ भार हो गईं लेकिन,
साफ़ विचार हुए फिर मेरे
करके याद कि जो कुछ मुझसे हो सकता था
किया, रहे संदेह न घेरे।

बरस दर-बरस मैं यह चिल्लाता आया हूँ
'मुझे अंततोगत्वा मेरी प्यारी समझी,
क्योंकि आ गया हूँ अब मैं अपनी ताक़त पर
और शब्द चलते हैं संकेतों पर मेरे।

मुझे शुरू से अगर समझती मेरी प्यारी,
हो सकता है मैं रहता रीते का रीता
शायद शब्द विचारों को मैं दूर हटाता,
सुख से खाता-पीता, जीता।

दूसरा ट्राय नहीं था
(नो सेकेंड ट्राय)

क्या इलजाम लगाऊँ उसने
मेरे दिन बर्बाद कर दिए
या उसने इस तरफ भले भोले लोगों को
भटकाया है तोड़-फोड़-हत्या करने को,
या कि बड़ों से कहा, चलें छोटी गलियों में
यदि सपनों के साथ कलेजा भी हो उनमें ?
ले दिमाग जो आभिजात्य होने के कारण
सहज आग-अंगार हो उठे
ले सुंदरता चढ़ी चाप-सी,
जैसी इस युग में स्वाभाविक नहीं रह गई
ले स्वभाव अभिमानी, एकाकी, कठोरतम
कभी नहीं यह संभव था वह शांत रह सके।
बनी धातुओं की ऐसी वह
और, भला, कर ही क्या सकती।
यही गनीमत है कि दूसरा ट्राय[1] नहीं था,
अग्नि ध्वस्त करने में उसको देर न लगती।

[1] ट्रॉय नगर ... हेलेन के कारण नष्ट हुआ था।

पुनर्मिलन
(रिकांसिलिएशन)

सभव है कुछ लोगो ने इलजाम लगाया
हो यह तुम पर, जब मेरे कानो को बहरा,
मेरी आखो को अधा कर,
जैसे बिजली के गिरने से,
दूर गई तुम मुझसे तब तुम साथ ले गईं
वे कविताएँ जो उनको आनदित करती,
और कुछ नही रहा कि जिसपर गीत लिखूँ मैं,
छोड पुराने राजो ताजो, तलवारो का—
वे सारी अध भूली चीजें—एक तरह से
जो कि तुम्हारी ही सुधिया थी अन्य रूप म।
लेकिन अब हम, क्योकि आज भी दुनिया वसी
जसी कल थी,
जब हम पर हसने के, रोने के दौर ह
उन्ही ताज, तलवारो ढालो को
उनके ऊपर फेकेग।
लेकिन, प्यारी, अब तुम मेरे आलिगन से
अलग न होना, जब से मुझको छोड गई थी
मेरे मन को कभी, कही भी शाति नही थी।

जो कठिन है उसके लिए आकर्षण

(द फ़ेसिनेशन आव ह्वाट इज़ डिफ़िकल्ट)

जो मुश्किल है उसके आकर्षण ने मेरी
नस-नाड़ी के सारे रस को सोख लिया है,
और हृदय का स्वाभाविक संतोष,
सहज आनंद निकाल कहीं फेंका है।
कुछ कुरेदता है मेरे कल्पना-अश्व[1] को—
जैसे उसके तन में पावन रक्त नहीं है,
औ' न कभी कूदा करता था ओलिम्पस[2] पर,
बादल से बादल के ऊपर—जिसमें वह चाहता
कि घोड़े खाकर काँपे, ज़ोर लगाए,
स्वेद बहाए, हचका देकर कूड़े-ढोती
गाड़ी खींचे।
जायँ जहन्नुम में वे नाटक
जिनका सत्तर तरह सदा करना पड़ता है,
कूट मूढ़ जो दिन-भर सिर खाते रहते हैं,
अभिनय-अभिनेता संबंधी घपे-पचड़े।
मैं खाता हूँ कसम, सवेरा तो होने दो
देखूँ रखता कौन तबेले में घोड़े को।

१ यूनानी दंत कथा के अनुसार कला की देवियों का परदार घोड़ा पेगसस।
२ यूनानी देवताओं का निवास-स्थान।

मधुगीत

(ए ड्रिंकिंग सॉंग)

अधरो पर आती है मदिरा,
आखो में आता है प्यार,
बूढे हो मरने के पहले
पडना है अपन तो पल्ले
इतना ही जीवन का सार,
मैं शराब का जाम उठाता,
तुमको अपने आगे पाता,
देता उसको तुम पर वार !
अधरो पर आती है मदिरा,
आखो मे आता है प्यार !

समय से ज्ञान होता है

(द कमिंग आव विज़डम विद टाइम)

तरु में अनगिन पत्ते होते,
मूल, मगर होता है एक,
मैंने पत्ते - फूल दिखाए,
यौवन के सब दिन भुठलाए,
अब मुमको बूढ़ा होने दो
छाया में ले मूल - विवेक
तरु में अगणित पत्ते होते
मूल मगर, होता है एक।

ये बादल हैं

(दीज़ आर द क्लाउड्स)

अस्तप्राय सूरज को घेरे जो, हैं, बादल,
उसके नेत्र ज्वलंत बंद करने से प्रोज्ज्वल।
कर जाते जो सबल
निर्बल अनुकरण उसी का करने लगते,
करते जाते, जब तक ऊँचा उठा
नहीं नीचे गिर जाता,
जब तक जो है एक, नहीं खंडित हो जाता,
जब तक सब कुछ पटरा होकर
नहीं धरातल एक सब-साधारण पाता।
इस कारण, हे मित्र
तुम्हारा महत्कार्य यदि पूर्ण हो चुका,
औ' ऐसी बात होती है, तो तुम इसको
निश्चय समझो—
तुम महानता के अधिकारी,
तुम्हें खेद इसका हो सकता
नहीं तुम्हारा है कोई उत्तराधिकारी।
अस्तप्राय सूरज को घेरे जो, हैं बादल,
उसके नेत्र ज्वलंत बंद करने से प्रोज्ज्वल।

एक मित्र की बीमारी

(ए फ्रेंड्स इलनेस)

बीमारी मे, एक तराजू के पलडे मे
पडा हुआ है,
देखा मैंने उसे ध्यान मे,
सारी दुनिया एक लपट मे
अगर कायले-सी जल जाए,
तो भी याई वजह नही है मन घबराए,
मैंने अब यह देख लिया वह तुल सकती है
एक अकेले आत्मवान स।

सब चीजें मुझे प्रलोभन दे सकती है

(आल थिंग्स कैन टेम्प्ट मी)

कुछ भी ऐसा नही प्रलोभन मे मैं जिसके
कविता करना छोड न सकता
किसी समय नारी या मुख ही बडा प्रलाभन
था, या उससे घटकर—सतही आवश्यकता
मेरी मूढा से परिचालित मात भूमि की
पर अब इस अभ्यस्त काय के करने मे ही
आसानी अनुभव करता हूँ।
जब जवान था
ऐस कवि का जो न सुनाता अपनी कविता
दस जोशाखरोश से जसे उसके कपडा
के अदर तलवार छिपी हो, टका न देता
लेकिन अब मैं, कर सकता यदि अपने मन की,
इतना ठडा, गूँगा, बहरा बनकर रहता
जितनी जल से बडी देर की निकली मछली।

पराजित मित्र

(टु ए फ्रेंड हूज वर्क हैज कम टु नथिंग)

अब तो सारा सत्य प्रकट है
तुम्हें एक निर्लज्ज धृष्ट से
हार मिली जो
मप्ट मार स्वीकार करो तुम।
स्वाभिमानियों की वगान तुम
बने उससे बराबरी करने को नीचे
उतर सकोगी,
जो, यदि साबित भी हो जाए
वह झूठा है,
शर्मिन्दा हो नहीं सकेगा
अपनी नजरों या पड़ोसियों की नजरों में।
गहन विजय से सहन,
उसी में पली हुई तुम,
पीठ फेर लो,
और एक पाषाण-वक्ष के अंदर
एक प्रमत्त बीन-सी
जिसके तारों पर विक्षिप्त उँगलियाँ चलतीं,
मप्ट मार कर मग्न रहो तुम
क्योंकि काम यह दुनिया में सबसे मुश्किल है।

जब हेलेन जीती थी

(ह्वेन हेलेन लिव्ड)

हम हताश होन पर चिल्लाया करते हैं,
दुनिया वाले मामूली-मामूली बातों,
या कि शोर-गुल वाले सस्ते
आमोदों के कारण अक्सर
अपनी पीठ फेर लेते हैं
सुदरता से,
जिसे जीतकर हम लाए हैं
जग के भीषण सघर्षों से,
फिर भी यदि हम
उस ऊँची मीनारों वाले गढ के अदर
चलने फिरनेवाले होते
जिसमे हेलेन—वह अनिद्य यूनान सुदरी—
औ' उसके प्रियतम रहते थे,
ट्राय नगर के अगणित लोगो के समान ही,
कभी-कभी ही उसे देखते,
कभी-कभी ही एक शब्द उससे कह पाते।

मोर

(पीकॉक़)

उसको धन क्या
जिसने अपने नयनों के
मानाभिमान से
एक बटा-सा मोर बनाया।
वात-प्रताड़ित, पत्थर भूरी
पड़ी-अकेली चट्टानें भी
उसकी इच्छा दुलराएँगी।
जिए, मरे या
गीली चट्टानों में,
सूने मैदानों में,
उसके प्राण प्रसन्न रहेंगे,
पर पर पर जुड़ते जाएँगे उसके
अपने नयनों के
मानाभिमान में।

हवा में नाचता हुआ बच्चा

(टु ए चाइल्ड डांसिंग इन द विंड)

नाचे जाओ सिंधु-तीर पर
तुमको क्या परवाह
तरंगें और हवाएँ गरज रही हैं ?
खारी बूँदों से भीगी अलकें लहराओ,
नाचे जाओ।

तुम छोटे हो
अभी नहीं तुमने देखा है
विजय मूर्ख की
हार प्रेम की
ज्यों ही वह विजयी होता है
कटी फसल गट्ठों में बंधने को बाकी है
और खेतिहर मर जाता है।

तुमको क्या डर
अगर बवंडर दानव-स्वर में चिल्लाता है

यौवन की याद

(ए मेमोरी आफ यूथ)

घड़ियाँ ऐसे बीतीं जैसे खेल-खेल में,
सीख चुका था जो कि प्रेम में
पड़कर ही सीखा जाता है,
इतनी बुद्धि मुझे थी जितनी
मुझ जैसे से प्रत्याशित थी,
फिर भी इसके बावजूद
जो कहने की मुझमें ताकत थी,
और प्रशंसा जिसकी उसने मुझसे की थी,
एक उठा बादल उत्तर की अशुभ दिशा में
और प्रेम का चाँद छिपाया उसने सहसा।

सच मानना मैं अपने प्रत्येक शब्द को
तन मन उसका सराहता था,
और सराहा यहाँ तलक, मानाभिमान में
एक नई आभा उसके नयनों में आई,
लाल हो गए गाल खुशी से,
अहंकार इस कदर बढ़ गया,
भू पर उनके पाँव नहीं सीधे पड़ते थे।
फिर भी मेरी सराहना का क्या फल निकला ?
मेरे सिर के ऊपर अँधियाला छाया था।

मूक हुए जड पापाणो से हम वठे थे,
हमे ज्ञात था,
यद्यपि उसने एक शब्द भी नही कहा था,
प्रेम, भले ही देवापम हा
किसी समय मर ही जाता है ।
इसके पूव कि इस विचार का
न् राघात प्राण ही ले ले,
नही मुन्नी एक नगण्य चिडी के स्वर पर
प्रेम वढा, उसने वादल की चादर फाडी,
अपना प्यारा चाद निकाल लिया फिर वाहर !

बीता वैभव

(फालेन मॅजेस्टी)

यद्यपि
भीड़ इकट्ठी हो जाती थी उसका चेहरा
जहाँ दिखाई पड़ जाता था,
औ' बूढ़े लोगों की आँख
        भी खोई-खोई लगती थी,
यही अकेला हाथ आज अंकित करता है
        बीत गई जो—
उठे जिप्सियों के मेले का
ज्यों अंतिम दरबारी कोई
गीत गा रहा हो वैभव का बीत गया जो।

तन की रेखा,
हृदय, मधुरता जिसे मिली थी प्रसन्नता में—
ये अब भी हैं,
लेकिन मैं अंकित करता हूँ चला गया जो।
भीड़ इकट्ठी होगी अब भी
और नहीं वह यह जानेगी,
ठीक उन्हीं राहों के ऊपर वह चलती है,
जिन पर कभी चला करती थी
एक चीज, जो जलते बादल-सी लगती थी।

कि रात आए
(दैट द नाइट कम)

वह रहती थी तूफानो मे, जद्दोजहद मे,
उसकी आखें बँधी हुई थी उन सपनो से
जो उनके हैं जो कि मौत गर्वीली मरते,
इसीलिए उसके मन को बर्दाश्त नही था
साधारण जीवन का सीधा-सादा जड क्रम,
वह रहती थी उस राजा की तरह कि जिसने
अपनी शादी के दिन इतने तोरण झंडे,
ढोल-नर्सिहे, कान फाड़ने वाली तोपे
लगवा दी थी शोर प्रदर्शन मे कट जाएँ
घडिया जल्दी कि रात आए,
कि रात आए,
जल्दी आए!

गुड़िया
(द डाल्स)

गुड़िया गुड़िया-कारीगर के घर के अंदर
देख पालना चिल्लाती है,
'यह तो है अपमान हमारा।'
लेकिन गुड्डा एक पुराना सख्त गुड्डा से—
क्योंकि नहीं था वह किसी को,
सिर्फ दिखावे भर को वह था—
जिसने अपनी-सी गुड्डा की कई पीढ़ियों
को देखा था, चिल्लाता है,
अलमारी का पूरा खाना जैसे सिर पर
उठा रहा है,
'कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है
जो इस घर की करे शिकायत,
लेकिन मालिक और मालकिन—
कितनी बेइज्जती हमारी—
साल-साल पर
एक बड़ी गंदी-गुलगुदी चीज़
यहाँ लाया करते हैं।
एक पालने में डाला है,
और एक आनेवाला है।'
इस गुड्डे को शोर मचाने, हाथ फेंकने

देख मालकिन समझ गई है
उसके पति ने उस खुड्डे गुड्डे की सारी
वातें सुन ली,
और पकड उसकी कुरमी को
उसके काना मे है कहती,
शीश झुका उसके कधो पर,
मेरे प्यारे, मेरे प्यारे,
हाय, हा गई फिर वह गलती!'

एक जामा

(ए कोट)

एड़ी से गर्दन तक लंबा
मैंने जामा एक बनाया
मधु-गीतों का,
और पुरानी दंत कथाएँ
उसपर काढ़ी
सोने चाँदी के तारों से,
पर न बचा वह वसन
बुद्धि के बजमारों से,
जिनको तन पर धार फिरे वे
सारी दुनिया को दिखलाते,
माना कारीगरी उन्हीं की।
गीत, चाहते वे, ले जाएँ,
यह अभियान अधिक साहस का,
नंगा होकर कदम बढ़ाए।

जगली हस
(द वाइल्ड स्वान ऐट कूल)

तरुओं के ऊपर है पतझर की सु दरता,
जगल के पथ सूख गए हैं,
अक्तूबर की गोधूली में
शात गगन पानी के अन्दर प्रतिबिंबित है,
पथरीले, छिछले तट पर फैले पानी में
हस एक कम साठ खड़े हैं।

प्रथम गिना जब उनको मैंने
तब से मुझपर से होकर
पतझार एक कम बीस गए हैं
गिनना खत्म न कर पाया था देखा मैंने,
उठे गगन में सहसा वे सब,
और सरसराते डैनो को मार-मारकर,
बिखर अधर में, अलग-अलग वे
लबे चक्कर लगे लगाने।

शानदार उनकी उडान मैंने देखी थी
और हृदय जब मेरा भारी।
तब से सब कुछ बदल गया है
जब मैं पहली बार

इसी पथरीले, छिछले तट पर घूमा था
हल्के पावो से, उनसे हल्के मन से,
और सुनी थी गोधूली मे सिर के ऊपर
उनके डैना की आवाजें,
रजत घटियाँ बजती हो ज्यो धीमे धीमे।

अब भी अथकित, प्रेयसि प्रियतम के जोडा-से
वे पथरीले, छिछले तट के ठडे पानी मे
चलते हैं
या उडान भरते अबर म,
उनके दिल म भरी जवानी वही पुरानी,
जहा कही भी चाह विचरें,
विजय प्रणय उनके पीछे-पीछे फिरते हैं।

लेकिन अब वे हसिल, सुदर
थिर पानी म आग बटते।
किस नाले, किस झील किनारे,
किस सेवार, किस सरसिज वन मे
वे तन अपना वास बनाकर,
पहुँचाते होगे सुख किनको, किन नयनो को,
जब मैं इन पथरीले तट पर फिर आऊँगा,
और नही इनको पाऊँगा ?

संगमरमर का मत्स्य-पुरुष

(मेन इम्ग्र् व विद इयर्स)

सपना ने घिस डाला मुझको,
मौसम ने घिस डाला मुझको,
संगमरमर का मत्स्य-पुरुष मैं
खडा हुआ हूँ जल-धारा मे,
औ' सारे दिन
इस नारी की सु दरता का देखा करता,
मानो वह पुस्तक म चित्रित,
आखें सुख अनुभव करती है,
कान चाहते है सुनना
जो वह रहस्य-स्वर मे कहती है,
बुद्धि रोकती मुझे और आगे बढने से,
अच्छा ही है,
क्योंकि उम्र के साथ अक्ल भी तो बढती है।
लेकिन फिर भी, लेकिन फिर भी
यह मेरा सपना या सच है ?
काश मिले हम-तुम तब होते
जब यौवन की ज्वाला मुझमे जाग रही थी,
लेकिन अब तो स्वप्न बाटते, उम्र काटते,
संगमरमर का मत्स्य पुरुष मैं
खडा हुआ हूँ जल धारा मे !

सजीव सौंदर्य
(द लिविंग ब्यूटी)

चूंकि तेल-बत्ती अब जलकर खत्म हो चुकी
और नसों में रक्त जम चुका
ठंडा होकर,
मैंने अपने असंतुष्ट मन को समझाया,
'मनुआ, अब तो ऐसी शक्ल सूरत-देखकर
ही धीरज धर
जो साँचे में ढली हुई है—किसी धातु की—
या जो गढ़कर गई बनाई—संगमरमर की।
मर-मर कर भी सुन्दरताएँ
बनी प्रेम की-सी छायाएँ
मन की एकाकी घड़ियों में चक्कर देतीं
पर ये अपने प्रेमी की सुधि कभी न लेतीं।
मनुआ, अब हम वृद्ध हो चुके।
जीवित सुन्दरताएँ उनकी जो जवान हैं
तप्त अश्रुओं से जो उनको अर्घ्य चढ़ाते
हम तो ठंडे हिम समान हैं।

वृद्ध मन
(ए सॉंग)

मैंने सोचा था कि जवानी कायम रखने
को डम्बल-मुग्दर काफी है,
ये दुरुस्त रक्खेंगे तन को।
हाय, किसी ने पहले ही यह क्यों न बताया
मन भी वृद्ध हुआ करता है?

आज धनी हूँ मैं शब्दों का, लेकिन औरत
शब्दों से सतुष्ट हुई कब?
मैं उसके मादक नयनों की मदिरा पीकर
हो सकता बेहोश नही अब।
हाय किसी ने पहले ही यह क्यों न बताया
मन भी वृद्ध हुआ करता है?

सच कहता हूँ, इच्छाओं की कमी नही है
लेकिन मन ही ठडा है अब,
मैं समझा था आग उसी को तन फूँकेगी
उसे चिता पर धर देंगे जब।
क्योंकि बताया था न किसी ने यह पहले से
मन भी वृद्ध हुआ करता है?

साहित्याचार्यगण

(द स्कालर्स)

गंजे, भूले हुए गुनाहों को, यौवन के,
बूढ़े, ज्ञानी मानी, औंधी खोपड़िया के
पाठ संपादन करते उन कविताओं का
अर्थ लगाते स्वर-शब्दों की उन लड़ियों के,
जो कि जवानों ने बिस्तर पर तड़प-तड़प कर
जोड़ीं अपने टूटे दिल के बहलाने को
या कि किसी अनजान सुन्दरी के कानों को
खुश करने को, सुख देने को, सहलाने को।

सबके सब हैं बैठ साथ बदलते आसन,
खाँस-खाँस कर कफ से भरते हैं दावातें,
सब कागज़ पर कलम, दरी पर घुटने घिसते,
और सोचते हैं जो सबने सोची बातें।
सबने सबकी सिर्फ़ जान-पहचान उन्हीं से
जिन्हें पड़ोसी उनके जाना-माना करते
पता नहीं वे सारे के सारे क्या कहते
अगर कैटुलस[1] कहीं निकट उनके आ पड़ते।

[1] ईसा-पूर्व शताब्दी का लातीनी कवि जिसने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में इस प्रकार का बहुत कुछ कटु मधु लिखा और उन पर [illegible]। रोम ने उससे अधिक सुकुमार और भावना-निरंजित कवि को जन्म नहीं दिया। [illegible] का कवि [illegible] का [illegible] मनुष्य प्रदर्शित हो उठा है।

उसकी प्रशसा

(हर प्रेज)

जिनकी कीर्ति सुना चाहूँगा
उनमे वह सबमे ऊपर है।
मैं घर मे घूमा हूँ, ऊपर चढा
और नीचे आया हूँ,
उस मनुष्य की तरह कि जिसने
नई किताब प्रकाशित की हो,
या उस युवती के समान जो
नए वस्त्र धारण करती है।

जब करता हूँ बात किसी न किसी विधि ऐसा
करता, उसकी चले प्रशसा सबसे ऊपर,
फिर भी कोई महिला कहती नई कहानी
पढी कही पर,
कोई सज्जन, अध साए-से, अस्फुट स्वर मे
कोई नाम दूसरा लेते
जो दिमाग मे दौड गया है।
जिनकी कीर्ति सुना चाहूँगा
उनमे वह सबसे ऊपर है।
नही करूँगा अब मैं बाते
बडी लडाई की, किताब की,

पगडंडी को पकड़ चलूँगा
जब तक मिलता नहीं भिखारी कोई ऐसा
जो कि हवा-पानी में बचने को कान में
बैठ गया है,
और करूँगा बात उससे
जब तक नाम न उसका आए
दीन-दुखारी अगर हुआ तो
उसका नाम जानता होगा,
उसे याद कर वह खुश होगा
गए दिनों में, नौजवान उसका गुण गाते,
बूढ़े उस पर दाप लगाते थे
पर दीनों में, दुखिया में,
नौजवान-बूढ़े सब उसका गुण गाते थे।

प्राण-प्रतिज्ञा

(ए डीप स्वोर्ने वाऊ)

तुमने प्राण प्रतिज्ञा की थी
पर न निभाई,
इसीलिए तो और-और जीवन मे आइ,
फिर भी जब-जब देखी मैंने मृत्यु सामने,
जब जब ऐसी ऊँचाई पर चढा
नगे ये पाव कापने,
जब जब मुझको मस्त कर दिया
मदिरा के दो चार जाम ने,
सहसा शक्ल तुम्हारी मुझको दी दिखलाई।
तुमने प्राण प्रतिज्ञा की थी
पर न निभाई,
इसीलिए तो और और जीवन मे आई।

गिलहरी के प्रति

(टु ए स्क्विरेल एट कील ना नो)

गिल्ली रानी आआ, आआ
मुझसे मेलो,
मुझसे प्यार दुआएँ ल ला।

तुम तो एसे भाग रही हो
जसे मेरे पास तमचा,
जा कि चला दूँगा मैं तुम पर,
गलत समझती मेरी मशा।

बस इतना ही कर सकता हूँ,
यही करूँगा,
जरा तुम्हारा सिर सहलाकर
जाने दूँगा।
गिल्ली रानी, आआ, आआ
मुझसे सेला,
मुझसे प्यार-दुआएँ ले ला।

युद्ध सवधी कविता की माँग पर
(ग्रान वींग ग्रारङ फॉर ए वार पोएम)

माच रहा हूँ मैं यह ज्यादा अच्छा हागा
शायर का मुँह बन्द रह ऐसे वक्ता म
पास हमारे जादू की वह छडी नही ह
ननाओ का सीधा कर द ।
एमा लिखना क्या काफी सिरदद नही है
जिमम काई सुकुमारी अल्हड यौवन म
मन वहलाए
जिममे बूढा जाडे की ठडी राता मे
गत यौवन की याद जगाए ।

गुलाब का पेड
(द रोज ट्री)

कहा कोनोली[1] से पियस[1] ने,
'लोग बिना समझे-बूझे बोला करते हैं,
हो सकता है यह गुलाब का पेड हमारा
सूख गया है ऐसे शब्दो की सासो से
जो ऊपर से शिष्ट-मधुर है,
या ऐसी उद्दाम हवाओ से सूखा जो
आर-पार विक्षुब्ध समुद्रो के बहती है।'

कहा कोनोली ने उत्तर मे,
'इसको पानी देने की आवश्यकता है
जिससे इसमे हरी पत्तियाँ फिर से निकलें
औ' प्रत्येक दिशा मे उसकी डाल फैलें,
डालो पर कलिया मुसकाएँ,
और फलकर मधुवन का सौंदय बढाएँ,
गध-गर्व मे मधुवन अपना शीश उठाए।'

कहा कोनोली से पियस ने,
'जबकि देश के सारे कूए सूख गए हैं
तब हम कैसे और कहाँ से पानी लाएँ ?
बात साफ है और साफ ही कहनी होगी,
अब हम अपना रक्त बहाएँ,
लाल रक्त अपना गुलाब की जड मे देकर
उसका सीधा खडा कर, फिर से हरियाएँ।

---

१ २ आयरलैंड निवासियों के नाम।

एक राजनीतिक बंदी

(आन ए पोलिटिकल प्रिज़नर)

जिस लडकी मे छोटपन से थोडा-सा भी
सब्र नही था,
अब उसमे इतना ज्यादा है भूरी-सी गल[1]
जरा न डरकर, उसकी छोटी दड-कोठरी
तक उड आई, नीचे उतरी
उसने अपनी नम उँगलिया उसपर फेरी
औ' अपनी उँगली से चारा उसे चुगाया।

उन लोने पखो को छूते याद न उसको
आई होगी उन वर्षों की
जब कटुता ने उसके मन का नही छुआ था,
सरस भावनाओ की जगहे
शुष्क विचारो ने न भरी थी,
जन प्रियता पाने को उर मे
वैमनस्य जब नही जगा था,
यानी जब वह राजनीति मे नही फँसी थी,
जहा रास्ता अधे को अधे दिखलाते
पडे हुए गदे नाले मे
उसका गदा पानी पीते।

---

1 एक समुद्री चिड़िया

हुए वहुत दिन जव मैंने उसको देखा था
वेन वुलवेन[1] के तले सभा मे वह आई थी,
घोडी चढकर,
उसके चेहरे पर गावा की सु दरता थी
जिसे व य एकाकी यौवन छेड रहा था।
इतनी साफ-सुघर लगती थी जसे चिडिया
जो कि पली हो चट्टाना मे,
तैरी हा सागर-लहरा पर।
तैरी हा सागर-लहरो पर
या कि हवा मे पर तोले हा
निकल सिंधु-तट की ऊँची चट्टान पर वने
शुभ्र नीड से
अभ्र विमडित नभ मडल के सर्वेक्षण को,
जव कि प्रभजन-ताडित उसके वक्षस्थल के
नीचे सागर की उत्ताल तरग उठ-गिर
गरज रही हा।

---

१ आयरलैण्ड की एक प्रसिद्ध पहाड़ी।

पुनरागमन

(द सेकेंड कमिंग)

क्रमश बढती हुई परिधि मे
चक्कर देकर ऊपर उठता
बाज नही वह सुन सकता है
बाजबाज जो नीचे कहता,
चीजे टूट-टूट गिरती हैं
केन्द्र सँभाल नही पाता है,
एक अराजकता जगती पर चढ बैठी है,
बाध तोडकर खूनी ज्वार बढा आता है,
और सब जगह भोले भालेपन की दुनिया
डूब गई है।
आज बडे विश्वास रिक्त है
और विषम कुठा छोटो मे भरी हुई है।

निश्चय ही इलहाम नया होनेवाला है,
निश्चय ही ईसा का पुनरागमन पास है।
'पुनरागमन' शब्द क्या मेरे मुँह से निकला
ऊपर को उठ गई यवनिका
पडी हुई युग-युग की स्मृति पर,

और भयंकर विस्मयकारी दृश्य एक
आंखों के आगे—
किसी बालुकामय मरुथल में
एक शक्ल नर के सर की, पर नाहर धड़ की,
फटी-फटी-सी आंखों वाली,
जिनमें निर्मम सूरज की-सी भरी रोशनी,
धीमे-धीमे पांव बढ़ाती आगे आती ,
उसके चारों ओर घूमते
रेगिस्तानी क्रुद्ध परिन्दों के परछाएं ।
अंधकार का परदा फिर से गिर जाता है ।
लेकिन अब मालूम मुझे है
एक पालने की हरकत ने
दो हजार बरसों की लंबी जड़ निद्रा को
दुःस्वप्नों से भंग किया था ,
और कौन यह अद्भुत प्राणी
काल-चक्र अपना पूरा कर
जन्म ग्रहण करने को
बेथलीहम[1] की तरफ बढ़ा जाता है ।

[1] वह स्थान जहाँ ईसा का जन्म हुआ था ।

चक्र

(द ह्वील)

जाड़े भर हम यही चाहते मधुऋतु आए,
औ' मधुऋतु से ऊब ग्रीष्म की इच्छा करते,
और ग्रीष्म की गर्म हवाओं से घबराकर
घोषित करते हैं जाड़ा सबसे अच्छा है,
जाड़ा आता तब न हमें कुछ मन को भाता
क्योंकि अभी मधुऋतु के आने में देरी है—
बतला दूँ क्या विचलित करती रहती हमको ?
काया की कामना नींद की, जो न भंग हो।

जवानी और बुढापा
(यूथ ऐंड एज)

जब जवान था,
परेशान जब जग करता था,
गुस्सा होकर चिल्लाता था।
रुखसत होते मेहमान को
अब यह दुनिया
मीठी-मीठी बातें कहकर
खिसकाती है।

आदमी—जवान और बूढा

(प्रथम प्रेम)

(ए मैन यग ऐंड ओल्ड—फर्स्ट लव)

पली हुई, गो, सु दर-मनहर नक्षत्रो मे,
जैसे नभ मे तिरता चदा,
निकली मेरे बहुत निकट से और लजाई
और ठिठककर खडी हो गई मेरे पथ मे,
मैंने समझा उसके तन मे
रक्त मास का हृदय धडकता।

लेकिन मैंने जब से रक्खा हाथ हृदय पर
औ' पाया पाषाण वहा है,
तब से मैंने जिसी काम मे हाथ लगाया
बिगड गया है,
पागल ही उसको छूने को हाथ बढाता
जो अबर म तिरता चदा।

वह मुसकाई, और फिरी उससे मत मेरी
और बन गया मैं आवारा,
कभी यहा पर, कभी वहाँ पर मैं फिरता हूँ
मारा-मारा।
औ' दिमाग खाली-खाली है,
जैसे तारा भरा गगन भी
जब उसके बाहर हो जाता तिरता चदा।

आदमी—जवान और बूढा

(मानव गरिमा)

(ए मैन यग ऐंड ओल्ड—ह्यूमन डिगनिटी)

सहृदय यदि उसका कह सकते,
वह सहृदय है चाँद की तरह,
उसके उर मे कोई सवेदना नहीं है,
सब के हित वह एक तरह का,
मेरे उर की पीर उसे ऐसे लगती है
जैसे चित्रावली बनी हो किसी भीत पर।

टूट तरु के नीचे
छोटे-से पत्थर-सा पडा हुआ हूँ मैं कब से,
विजडित जडिमा से।
मेरा दिल हल्का हो जाता,
डाली पर बैठी चिडिया को
यदि मैं अपनी पीर सुनाता,
लेकिन मैं मुँह बन्द किए मानव गरिमा से।

आदमी—जवान और बूढ़ा

(मत्स्यकन्या)

(द मैन यंग ऐंड ओल्ड—द मरमेड)

एक मत्स्यकन्या ने एक युवक को देखा,
तैर रहा था,
मुग्ध हो गई उसके ऊपर,
आलिंगन में उसको बाँधा
औ' हँसकर वे गहरी डुबकी एक लगाई,
औ' तब अपनी क्रीड़ा की निर्ममता समझी
जब नीचे से लाश उठी ऊपर, उतराई—
प्रेमी का भी दम गहरे में घुट जाता है।

आदमी—जवान और बूढा

(खाली प्याला)

(द मैन यग ऐंड ओल्ड—द एम्प्टी कप)

बे-पानी मरते पागल को
एक मिला पानी का प्याला,
किंतु कल्पना कर, बद किस्मत,—
एक घूंट यदि और पिया तो पेट फटेगा—
प्याले को मुंह तक ले जाने का दु साहस
नही कर सका ।

पिछले अक्टूबर मैंने भी प्याला पाया,
लेकिन वह बिल्कुल छूंछा था,
इसीलिए मैं पगलाया हूं,
छपको एक न ले पाया हूं ।

आदमी—जवान और बूढा

(उसके यौवन के साथी)

(द मैन यग ऐंड ओल्ड—द फ्रेंड्स आव हिज़ यूथ)

बूढा हो जाने के कारण
क्या मेरी आवाज गई है ?
नही, गला मेरा बैठा है हँसते-हँसते ।
जब चदा का पेट फूलता
हँसी नही मेरी रुकती है,
क्योकि गली मे तब आती है मेज[1]
गोद मे लेकर पत्थर,
पत्थर को कबल से ढककर,
औ' लोरी गाती जाती है
लेकिन शाति नही पाती है ।
जो कठोर दिल थी यौवन मे
पत्थर-जैसी,
और अनुवर जैसे बजर,
अब समझा करती है
बच्चा है वह पत्थर !
औ' पीटर[2] जो धाकड था
अपने यौवन मे,
रोमानी किस्सो का नायक,

१ स्त्री का नाम
२ पुरुष का नाम

अब पत्थर पर उचक-उचककर वह कहता है,
'मैं ? मैं हूँ मोरो का राजा !'
उन्हें देखकर इतना हँसता, इतना हँसता,
आखा मे आसू आ जाते,
आता मे बल पड-पड जाता ।
याद मुझे आता कि मेज के
स्वर म प्रम दवा चिल्लाता,
औ' पीटर के स्वर मे उसका
उभरा अह पुकार मचाना ।

आदमी—जवान और बूढा

(पतझर और वसत)

(द मैन यग ऐंड ओल्ड—समर ऐंड स्प्रिग)

एक पुराने काटेदार वृक्ष के नीचे
बठे बठे हम दानो ने रात विता दी,
बचपन से अल्हडपन तक जो
रही, करी थी सब वह डाली।
यौवन की वातो तक आते
हमे हुआ आभास कि हम हैं
अलग अलग रह आधे-आधे,
पूरे हाग
एक दूसरे को जो आलिंगन मे वाधें!

इसी समय पीटर[1] जो आया
हमे देखकर उसकी आखें लाल हो गईं,
उसी वक्ष के नीचे उसने
पीटर से भी
अपने बचपन-अल्हडपन की वातें की थी।

बीत गए दिन
जबकि हमारे दिल के अदर
पतझड के झोंके चलते थे।
बीत गए दिन
जबकि वसती मस्ती मे वह मुसकाती थी।

---

१ किसी युवक का नाम

मृत्यु
(डेथ)

मरता पशु भय नही जानता
और न आशा
मरते मानव की आँखो मे
भय बसता, आशाएँ बसती
गा नि न जाने कितनी बार मरा है
मरकर वह जन्मा है।
जो महान है,
स्वाभिमान मे,
हत्यारा को देख सामने
उनपर हँसता,
व्यंग्य मृत्यु के ऊपर कसता।
मृत्यु तत्वत क्या है,
इसका है वह ज्ञाना,
वही मृत्यु का है निर्माता।

रस और रक्त

(आयरलैंड ब्लड)

नीलम-कंचन की समाधि में
सोए पावन पुण्य नारियों की
काया से
रस रहस्यमय रिसता रहता,
सुरभि सुमन की फैला करती।

पावों कुचले गारे
भारी भारी ईंटों की कब्रों में
रक्तपायियों की लाशें हैं, रक्त-सनी जो,
रक्त लगा जिनके हाथों में,
जिनसे टपके रक्त की बूंद
उनपर लिपटे हुए कफन को
मैला करती।

गिरा दूध
(स्पिल्ट मिल्क)

हमे,
जिन्होंने काम किया, उसपर साचा है
साचा, उसपर काम किया है,
दूध की तरह
किसी शिला पर गिर जाना है,
गिरकर फैल, सूख जाना है,
यह जाना है।

उन्नीसवीं सदी और उसके बाद
(द नाइंटीथ सेंचुरी ऐंड आफ्टर)

ज्वर गुंजित करनेवाला
गीत गया,
अब कभी नहीं फिर आनेवाला,
पीछे छूटी प्रतिध्वनियों में
भी आनंद नहीं कुछ कम है
ज्वार गया
भाटे की पीछे हटनेवाली
स्वल्प लहरियाँ
तट पर फैले उपल-दलों पर
कल-कल, छल छल करती जातीं।

तीन गतियाँ

(श्री मूनमेटस)

शेक्सपियर की मछली ने
जा दूर किनारे में गहरा सागर मथ डाला।
रूमानी कवि की लघु मछली
तट से दूर नहीं जा पाई,
रही जाल के अंदर तिरती
छोटी एक परिधि में फिरती,
और, मछलियां जा तट पर, छटपटा रही हैं
व किसकी हैं ?

सशय

(१)

(पेसिलेशन-I)

जन्म निधन के
दो छोरो के बीच
जिदगी मानव की है।
सहसा एक ज्वाल आती है,
लपट उठाती एक स्वास, जो
दिवा रात्रि के
अतर को विनष्ट कर देती।
काया मृत्यु इसे कहती है,
हृदय इसे पश्चात्तापो का अवसर कहता।
कहना उनका अगर सही है
तो क्या है आनद
        मुझे मालूम नही है।

सशय

(२)

(वेस्मिलेशन-II)

एक वक्ष है
जो धुर फुनगी स नीचे तक
आधा चमक रहा है
कंचन की लपटो से,
आधा चमक रहा है
मरकत के पत्तो से
घन कि जिनपर ओस टपकती।
आधे-आधे होकर भी
अपने-अपने म
दोनो हिस्से पूरे-पूरे।
आधे म जो झुलस बिखरता,
आधा उसका डह-डह करता।
क्रुद्ध-तप्त ज्वाला-माला औ'
स्निग्ध शान्त घन पल्लव-दल के
बीच प्रतिष्ठित कर देता है
जो समत्व की मूर्ति अकम्पित,
मन न जाने
यह किन सत्यो का ज्ञाता है,
त्राण दुखो से पा जाता है।

सशय

(३)

(नैस्सिलेशन III)

ग्रीष्म-सूय किरणा से चाहे
आसमान में बिखरे बादल
पत्ता जैसे, चमक रहे हा,
शीत-चद्र किरणा से चाहे
वन धरती छाया प्रकाश की
जाल बनी हो,
मुझपर है दायित्व भार इतना भारी मैं
उनको देख नही पाता हूँ।

बरसो बीते जो कुछ मैंने कहा, किया था,
नही कहा था, नही किया था,
पर सोचा था कहूँ-करूँगा,
मुझपर बोझ बने बठे है।
कोई ऐसा दिवस न जाता
जब कुछ ऐसा याद न आता,
जिससे मेरा स्वाभिमान,
जिससे मेरा मन चोट न खाता।

बाला-गीत

(गर्ल्स सॉंग)

निकल अकेली बाहर आई
गीत प्रणय के मैं गाऊँ,
उलझी मेरी आँखें किससे,
क्या मैं तुमको बतलाऊँ।

मिला दूसरा युवक घड़ी पर
देख उसे मैं मुसकाई,
पर जब उससे की दो बातें
आँखें मेरी भर आईं।

किस्सा थोड़ा, दो कड़ियों में
मेरे अनुभव का संचय—
युवक मिला था, वृद्ध-हृदय था,
वृद्ध मिला था युवक-हृदय।

वृद्ध की प्रार्थना

(ए प्रेयर फार ओल्ड एज)

ऐसे सूक्ष्म विचारो से, प्रभु, मुझे बचाना
जो दिमाग के अदर जन्म लिया करते है,
जो गीतो मे युग-युग तक जिंदा रहते है
वे गायक के उर का रक्त पिया करते हैं।

हे मेरे प्रभु, मुझे बचाना
उनसे जिनसे वृद्ध बना करता है दाना,
जिनको पाकर वह सबका आदर पाता है,
उस दानाई से वह नादानी अच्छी है
जिसमे मानव गीता को रचता, गाता है।

यही प्राथना अपने प्रभु से करनी मुझको,
भले मरूँ मैं बूढा होकर
मत्यु मुझे जब लेने आए,
मुझको वह नादान,
भाव मे भीगा, डूबा, गाता पाए।

जापानी कविता का अनुकरण

(इमीटेटेड फ्राम द जैपेनीज़)

बात बड़े अचरज की है यह—
सत्तर साल रहा जीता मैं,

(जय, वसंत के फूलों की जय
फिर वसंत वन में आया है।)

सत्तर साल रहा जीता मैं—
साधारण खाता-पीता मैं—
बचपन बीता, गई जवानी,
इसके बाद बुढ़ापा आया,
गुरा हाकर के,
किंतु कभी मैं नाच न पाया।

तो क्या ?
(ह्राट देन)

जव वह पढता था तव उसके सहपाठी गण कहते थे,
मित्र, करो कुछ एसा जिसमे आगे चलकर पाओ नाम,
उसने भी ऐसा ही साचा और नियम-सयम साधा,
और जवानी के वर्षों को कर डाला आराम हराम।
काई प्रेत पुरातन बोला,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

उसने जो कुछ लिखा, पढा उसको दुनिया के लोगो ने,
उसकी इतनी विकी किताव, उसने इतना धन जोडा,
जा चाहा वह खाया, पहना, और खिलाया मित्रा को,
मीत वना जो उसका, उसने साथ न फिर उसका छाडा।
काई प्रेत पुरातन बाला,
ऐसा कर डाला ता क्या ?—

उसने जो सुख सपने देखे थे वे सारे सत्य हुए—
वीवी, वेटी, वेटा, रहने को सु दर छोटा-सा घर,
खुली जगह जिसम गोभी का फूल, टमाटर उगता हा,
कवि, लेखक, साहित्यिक आएँ उससे मिलने को सादर।

कोई प्रेत पुरातन बोला,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

वृद्ध हुआ तो उसने सोचा, मेरा काम समाप्त हुआ,
मैंने बचपन की आशाओं को जीवन में रूप दिया,
भूल मुझे कोसें जी भरकर, मैंने कब हिम्मत हारी,
एक चीज़ में हाथ लगाया था, उसको परिपूर्ण किया !
कोई प्रेत पुरातन बोला,
और ज़ोर से,
ऐसा कर डाला तो क्या ?—

महान पर्व

(द ग्रेट डे)

इन्कलाब की जय हो, जय हो !
और बडी तोपो को दागो—
एक भिखारी घोडे पर चढ
पैदल एक भिखारी पर कोडा सटकाता ।

इन्कलाब की विजय हो गई,
और बडी तोपे दगती हैं,
भिखारियो ने
आपस मे जगह बदली है,
लेकिन कोडा उसी तरह से चलता जाता !

पारनेल[1]

(पारनेल)

पारनेल का
पथ पर आते देख
लगाया मज़दूरों ने
जय का नारा।

पारनेल धीमे से बोले,
आयरलैंड स्वतंत्र बनेगा,
लेकिन तब भी तुम ढोओगे
ईंटा-गारा।

---

[1] आयरलैंड के स्वतंत्र संग्राम का एक नेता।

जो हार गया

(ह्वाट वाज़ लास्ट)

जो कुछ हार गया मैं
उसके गीत सुनाता
लेकिन जो कुछ जीत गया
उससे डरता हूँ।
लडी लडाई जसे फिर से लडी जा रही,
मैं उसमे शामिल होता हूँ,
हार गया जो राजा वह मेरा राजा है,
हारे सैनिक मेरे सैनिक,
कदम बढाते रह
सुबह से शाम तलक वे
या सध्या से अरुणोदय तक,
पाव पीटते रहते है वे
सदा एक ही छाटे से पत्थर के ऊपर।

प्रेरक

(द स्पर)

तुम इसको वीभत्स समझते हो
जो मुझको क्रोध, वासना
घेर रहती
वृद्धावस्था आने पर भी ।
जब जवान था
ये दाना ही
इतने भारी रोग नहीं थे
जिनसे पीड़ित आह भरूँ मैं ।
क्रोध, वासना छोड़
बचा है क्या अब मुझमें
जिनसे प्रेरित गान करूँ मैं ?

राजकवि को उलाहना

(ए माडेल फार द लारिएट)

उदयाचल से अस्ताचल तक के तख्तों पर
तरह-तरह के राजाओं ने राज किया है,
बड़ा किसी को, भला किसी को घोषित करके
तरह-तरह की रैयत ने सम्मान दिया है।
इसपर अचरज करने की कुछ नहीं जरूरत,
यदि ऐसों ने राज्य मान मर्यादा के हित
खड़ा प्रतीक्षा में रक्खा अपने प्रेमी को।
खड़ा प्रतीक्षा में—।

कोई फूला था फकीर से राजा बनकर,
कोई काले-गोरे गुंडों का राजा था,
और हुकूमत करता था इसलिए कि उसकी
तलवारों ने झुका दिया था सबका माथा,
औ' पीता था शर्बत या शराब मनमानी
क्योंकि खिलाफ नहीं कोई कुछ कह सकता था
खड़ा प्रतीक्षा में रखता था निज प्रेमी को।
खड़ा प्रतीक्षा में—।

गिरा साधती मौन, आधुनिक सिंहासन के
चाटुकार जब उसकी जय-जयकार मनाते।
तारीफें, जो बेची और खरीदी जातीं,
दफ्तर, जिनको कुछ थोड़े से मूख चलाते,
सरकारी मुहरें, या दस्तावेज, दस्तखत—
क्या हैं, जिनके लिए कि कोई भला आदमी
खड़ा प्रतीक्षा में रक्खे अपने प्रेमी को।
खड़ा प्रतीक्षा में—।

पुराने पत्थर का सलीब

(द ओल्ड स्टोन क्रास)

'नेता भोला भाला होता,
झूठ यंत्रवत वोला करता,
पत्रकार झूठों को रचता
और तुम्हारा गला पकड़ता,
बाट पड़ोसी देख जाते,
तुम घर बैठा मौज उड़ाते।
वहाँ पुराने पत्थर के सलीब के नीचे
खड़े चमकते कवच पहननेवाले ने।
यह युग, आनेवाला युग भी
झूठ, दगा, धोखेबाजी को
भले-बुरे में भेद बताए,
किसको है मालूम तरीका ?
नीचों के हैं ऊँचे कान,
क्या है कौन, कौन पहचान।'
वहाँ पुराने पत्थर के सलीब के नीचे
खड़े चमकते कवच पहनने वाले ने।
अभिनेता बेसुरे हुए हैं,
देख मुझे गुस्सा आता है।
पहले, उत्तम वह अभिनेता
मूर्द-वन्दन जो गुनता है।
वह उनको मालूम नहीं है,
कोई दृश्य महान गान पर खत्म हुआ तो
जितना मन हो गाना है।'
वहाँ पुराने पत्थर के सलीब के नीचे
खड़े चमकते कवच पहननेवाले ने।

पुराने पत्थर का सलीब

वे प्रतिमाएँ
(दोज़ इमेजज़)

सुनते हो मैं क्या कहता हूँ,
अपनी मनोगुहा से निकला ?
मुक्त भाव से मुक्त हवा में,
मुक्त सूर्य किरणों में विचरो।

मैं तुमसे यह कब कहता हूँ
रोम और मास्को सिधारो,
इस चक्कर को छोड़ो, यारो,
और कला पर तन मन वारो।

जाओ, प्रतिमाओं को खोजो,
जिनमें भेद भरा है भारी
वन के चारों कोनों पर जा—
कुलटा, बालक, बाघ, कुमारी।

और गरुड़ जो उड़ता नभ में
पर फैलाए, उसको जानो,
गाओ फिर जितना जी चाहे
जा इन पाँचों को पहचानो।

वृद्ध न क्यों हो जाएँ पागल ?

(व्हाई शुड नाट ओल्ड मेन बी मैड)

ऐसा पाकर वृद्ध न क्या हो जाएँ पागल ?
मुदर, स्वस्थ, जवान जिसे जग ने देखा कल
जिसकी थी मजबूत कलाई, स्वच्छ बतीसी,
आज शराबी है, करता अखबार-नवीसी।
वह लड़की जो कभी दांत[1] पर थी मरती,
आज किसी मूसट से बच्चे पैदा करती।
नारि कभी थे जिसे कला के सपने प्यारे
चढ़ गाड़ी पर आज लगाती फिरती नारे।
कुछ कहते हैं इसका किस्मत से नाता है
भूखा मरता भला, बुरा हलुआ खाता है।
कुछ, केवल इसलिए कि उनके मित्र-पड़ोसी
बुद्धू हैं, जैसे परदे पर हो तस्वीरें,
करते हैं इन्कार देखने से उनका जो
प्रसर बुद्धि के, और जिन्होंने एक बार उठ
उन्नति की ही ओर प्रगति की धीरे धीरे।
युवक देखते नहीं कभी ऐसी बातों को,
पर वृद्धों की आग तले यह सब आता है,
और पुरानी प्रथा में भी मिल पाता है
नहीं तसल्ली देनेवाला जब कोई हल,
बतलाओ तब, वृद्ध न क्या हो जाएँ पागल ?

[1] (१२६५-१३२१)— इटली के महाकवि 'द डिवाइन कमिडी' का रचयिता।

राजनीति

(पालिटिक्स)

'हमारे युग म मानवता के भाग्य का रहस्य राजनीति के क्षेत्र म खुलता है।

—थामस मन

रूस में, जब वह सुकुमारी खडी सामन,
वह सुन सकता,
जो कहते है रोम-रूस के अमरीका के
नीति प्रवक्ता ?
दुनिया घूमा हुआ व्यक्ति यह जो कहता है
आखो देखी,
और उधर वे राजनीति के पण्डित कहते
कागद-लेखी।
हो सच, सब यह बात युद्ध की और युद्ध की
आह-कराहे
काश युवा हो सकता फिर मैं, आलिगन मे
भरती उसका
मेरी बाहे !

‘छाया’ से कुछ पक्तियाँ
(लाइ स फ्राम द अपेरिशन)

जब मनुष्य बूढा होता है
तब दिनानुदिन
उसका उर-आनद सरोवर
अधिकाधिक गहरा होता है
और अत मे
उसका अतर
जो पहले छूँछा था
पूरा भर जाता है।
बाहर जजर,
पर भीतर के पूरे मन की
उसको आवश्यकता होती
क्योंकि रात घिरती जाती है—
रात रहस्यों का उद्घाटन कर जो
मन को डरपाती है।



परिशिष्ट–१

विलियम बटलर ईट्स एक परिचय

'कास्ट ए कोल्ड आई
आन लाइफ, आन डेथ,
हॉर्समन, पास बाई !'
(उदासीन, मस्त, एक नजर
जीवन पर डालो, और मरण पर,
अश्वारोही, निकल यहाँ से जाओ सत्वर !)

आज मुझे अय म बारह वर्ष पहले की वह शाम याद आती है जब विलियम बटलर ईट्स पर अपने शोध के सम्बन्ध म दो मास तक आयरलैंड की यात्रा करने के पश्चात मैं ड्रमक्लिफ आकर उनकी समाधि के सामने खड़ा हुआ था।

ईट्स की इच्छा के अनुसार जिसे उन्होंने अपनी एक कविता म व्यक्त किया था, बेन बुलबन पर्वत की छाया म उनकी समाधि है, बहुत ही सादी पचयार्ड की अन्य समाधियों जसी, पास ही एक छोटा-सा गिरजाघर है। विशिष्टता है सिरहाने की तरफ लगे पत्थर म जिसपर उपयुक्त पंक्तियाँ खुदी हुई हैं। ईट्स ने अपनी मृत्यु म कुछ मास पूव, अपने एपिटाफ के लिए य पंक्तियाँ लिखी थी।

और इन पंक्तियों को पढ़ते हुए मेरा ध्यान चला गया उपनिषद् के 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' पर, कबीर के पद 'ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया' पर और पन्त की पंक्ति पर 'अनुरक्त न हो जीवन पर—यह कहा ता है। प्रज्ञा की यह उपलब्धि ईट्स को बड़े ही श्रम, स्वाध्याय, अनुभूति अभ्यास और संघर्ष से प्राप्त हुई थी। उन्होंने कवि के रूप म गुनगुनाना शुरू किया था और अन्त म चलकर व गाने के स्वर म बोलने लग थे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मेरे शोध निरीक्षक, डा० टी० आर० हन ईट्स के अन्तिम दिनों म उनसे मिले थे। ईट्स ने उनसे पूछा, मेरी कविता का सबसे बड़ा गुण तुम क्या समझते हो? डा० हन बोले—प्रज्ञा (विज़्डम)। प्रज्ञा से उनका तात्पर्य था विचारों और भावनाओं के स्थायी मूल्यों से, जीवन के हर्ष विषाद, प्रेम घृणा आदि द्वन्द्वों का साहस, निर्भीकता और मानव की पौरुषपूर्ण गरिमा से स्वीकार करने से और अतत उन निरपेक्षता, संयम,

सतुलन और गाभीय से, जा जीवन के भोक्ता का नही, जीवन के द्रष्टा का प्राप्त होता है। ईटस की कविता के इन्ही गुणा ने उसे ऐसी सावभौमता प्रदान की है कि ससार मे सब जगह जहा भाषा का व्यवधान नही है, उसके प्रेमी और प्रशसक हैं।

ईटस को अपने लब साहित्यिक जीवन म प्रख्यात समालोचको की कटु आलोचनाओ का भी शिकार होना पडा था। समय-समय पर उन्ह पलायनवादी, अस्वस्थ सौंदयवादी, सीमित भावनाओ का विशेषकर असफल प्रेम का कवि, रूमानी काव्य परम्परा का अतिम उच्छिष्ट, अस्पष्ट प्रतीकवादी, और अत मे व्यक्तिपरक रूपको का क्लिष्ट, दुर्बोध और असगत कवि कहा गया था। उनके परवर्ती काव्य म अश्लीलता के दोष भी देखे गए थ। उनके अपने ही देश अपने ही नगर की रूढिग्रस्त जनता ने उनके मुक्त विचारो का विरोध किया था और एक बार तो उनके एक नाटक के प्रदशन के विरुद्ध धरना तक दिया गया था। लेकिन ईटस निरन्तर गतिशील और विकासोन्मुख बने रहे। यो तो किसी भी दर्जे पर उनका स्वर ऐसा नही था कि उसकी उपेक्षा की जा सके, परन्तु अपने जीवन के पिछले दस वर्षो मे उनके शब्दो म जो गहराई जो व्यापकता, जो जादुई शक्ति आ गई थी वह अद्वितीय नही तो दुलभ अवश्य कही जा सकती है। इसम सन्देह नही कि ईटस जबदस्त शब्द साधक थे। लोग उन्ह अक्सर विशुद्ध कविता का उपासक कह देते है। मैं समझता हूँ यह केवल अध सत्य है। परिधान का आधा सौदय परिधान धारण करनेवाले म निहित होता है। ईटस को यह अनुभूति शायद बहुत पहले हो गई थी कि जीवन की सच्चाइयाँ सधे और सिद्ध शब्दो म ही अपने को प्रकट करती है। वास्तव म ईटस की साधना दुहरी थी और दोनो म उन्ह अदभुत सफलता प्राप्त हुई थी। जहाँ भी जीवन और कला की कसौटी साथ रखी जाएगी वहाँ ईटस का काव्य-कचन अपने खरेपन का सबूत देगा। उनके पास मानवता का एक स्वस्थ और सुदृढ मानदड है उनकी अनुभूतियाँ खरी और गहरी हैं उनकी अभिव्यक्तिया कला समत और सुगठित हैं।

ईटस अपने जीवन के अतिम वर्षो म अग्रेजी भाषा के सवश्रेष्ठ कवि माने जाने लगे थे। उन्ह १९२३ म नोबेल पुरस्कार भी मिला था। टी० एस० इलियट ने उनके मरने के उपरान्त उन्ह युग का सबसे बडा प्रतिनिधि कवि कहा था। मृत्यु के पश्चात पिछले पच्चीस वर्षो म ईटस के कवि का कद निरन्तर बढता गया है। अग्रेजी के विख्यात समालोचको मे शायद ही कोई ऐसा हो जिसने ईटस के काव्य के किसी पक्ष पर प्रकाश न डाला हो। साथ ही ईटस को लोकप्रियता भी कम नही मिली। विशेषज्ञो का आदर और जनसाधारण का प्रेम उन्ह एक साथ मिला है।

ईट्स का जन्म १८६५ म डबलिन म, एक मध्यवित्त परिवार मे हुआ था। उनके पिता प्रि रफेलाइट स्कूल के चित्रकार थे और प्रि रेफेलाइट कविता के प्रेमी। ईसाई धम की रूढिया से वे सवथा मुक्त थे। अपने लडकपन मे उन्ही की

प्रेरणा से ईट्स ने स्पेंसर, ब्लेक, शेली और रासेटी की कविताओं का अध्ययन किया और इन कवियों के रूमानी रंग, ध्वनि, कल्पना में वे डूब गए। इंग्लैंड के स्कूलों में अपनी प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करने के बाद उन्होंने डबलिन में विधिवत चित्रकला की शिक्षा ली। विशेष सफलता शायद उन्हें नहीं मिली और किसी अंतःप्रेरणा से उन्होंने कवि के रूप में अपने को स्थापित करने का निश्चय किया। उनके कवि में चित्रकार प्रच्छन्न है।

उन दिनों इंग्लैंड में, उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में पेटर और वाइल्ड की 'कला के लिए कला' के सिद्धान्त का बोलबाला था। सौ बरस से अधिक पुरानी रूमानी कविता ब्लेक और बर्न्स से आरंभ करके रासेटी, स्विनबर्न और मारिस तक अपना सारा वैभव बिखेर चुकी थी, फिर भी वह कुछ छोटे कवियों, जैसे लियोनेल जानसन, डासन, डेविडसन, के द्वारा कुछ कृत्रिमता, कुछ अतिशयता का आश्रय लेकर अपने को असन्तोष जीवित रखने का प्रयत्न कर रही थी। इनको बाद को डिकेडेंट अथवा ह्रासमुखी कवियों की संज्ञा दी गई। लंदन में उनका एक क्लब भी था जिसे राइमर्स क्लब कहते थे और ईट्स ने अपने कवि-जीवन के प्रारंभ में अपने को इन्हीं कवियों के बीच में पाया। ये कवि अपने विचित्र बाल, वेश-भूषा, रहन-सहन, अव्यवस्थित जीवन से अपने को समाज से अलग रखने और समाज के लिए आकर्षक बनने का प्रयत्न किया करते थे। यह तो नहीं कहा जा सकता कि ईट्स उनके प्रभाव से बिल्कुल अछूते रहे, परन्तु शीघ्र ही उनको यह अनुभूति हो गई कि उनका स्थान उनके बीच नहीं है या यदि है भी तो उसे एक विशिष्टता लेकर होना चाहिए। वे आयरलैंड के हैं, केल्ट रक्त के हैं और उन्हें अपने कल्पित व्यक्तित्व को अलग रखना चाहिए और अपनी रचनाओं में उसकी छाप छोड़नी चाहिए। ईट्स की प्रारंभिक रचनाओं में भी उनका केल्ट स्पष्ट बोलता है। उत्तरोत्तर वे अपने देश के साथ अधिकाधिक एकात्म होते गए।

अपनी इस धारणा के लिए ईट्स को बल मिला था आयरलैंड के पुनर्जागरण में। आयरलैंड ७०० बरसों की अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होने के लिए जन-क्रांति प्रयत्न करने की तैयारी में था। डबलिन आदि नगरों में राजनीतिक हलचलों के साथ ही बहुत-सी सांस्कृतिक और साहित्यिक हलचलें हो रही थीं। आयरलैंड अपनी मूल शक्ति को पहचान, कला और साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति कर यारोपीय मनस पर प्रतिष्ठित करना चाहता था। नई प्रतिभाएँ उभर रही थीं। इनमें से आगे चलकर जार्ज मूर, लेडी ग्रिगोरी, सिंज, जार्ज रसल (ए० ई०) बहुत विख्यात हुए। ईट्स तो उस पुनर्जागरण के केन्द्र ही बन गए। उन्होंने आयरलैंड को एक राष्ट्रीय रंगमंच दिया एबी थियेटर के रूप में। पर यह समझना गलत होगा कि एबी थियेटर राष्ट्रीय आंदोलन के प्रचार का माध्यम था। सच्चाई तो यह है कि ईट्स को कलाप्रेमी, सुरुचिपूर्ण मन राजनीति की गंदगी और हो-हल्ले से बहुत घबराता

था। उनके देशवासियों ने एक समय उनके देश प्रेम पर संदेह किया था। राष्ट्रीय नेताओं की ओर से ही कई बार उनके थियेटर का विरोध हुआ था। परंतु ईट्स कभी भी यह सहन नहीं कर सकते थे कि राजनीति की संकीर्णता कला, साहित्य, रंगमंच पर हावी हो। ईट्स के इस उदार दृष्टिकोण का प्रभाव समस्त समकालीन आयरी साहित्य पर व्यापक रूप से पड़ा।

यहां एक बात समझ लेना बहुत जरूरी है। ईट्स को किसी आंदोलन अथवा प्रवृत्ति का प्रवक्ता अथवा माउथपीस मात्र समझकर हम उनके प्रति न्याय नहीं कर सकते। ईट्स का अपना अलग व्यक्तित्व है और वे उसकी सत्ता और स्वतंत्रता के प्रति सचेत हैं। वे भीड़ में न खो सकते थे और न खो जाना चाहते ही थे। अतिशय वैयक्तिकता और आभिजात्य अभिमान का आरोप भी उनपर लगाया गया था। एकदम निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के स्तर पर कला की सार्वजनीनता देने की क्षमता आज उनकी विशिष्टता मानी जाती है। उदाहरण के लिए हम उनकी प्रेमानुभूतियों को ले सकते हैं। अपने यौवन में वे आयरलैंड के राष्ट्रीय आंदोलन की एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्री और अनिंद्य सुंदरी मॉड गॉन के प्रेम में पड़ गए थे। यह प्रेम सफल नहीं हो सका और ईट्स अपनी पचास वय की अवस्था तक उस वेदना को झेलते रहे। ईट्स के आधे काव्य पर मॉड गॉन की छाया किसी न किसी रूप में पड़ी है लेकिन अपने इसी काव्य में उन्होंने रूमानियत की परंपरा में जो कुछ स्वस्थ गरिमामय ऊर्ध्वोन्मुखी है, उसे बचा लिया है। कलापक्ष में आयरलैंड की दंतकथाओं, लोक विश्वासों, लोक गीतों, लोक लय सहजों का आश्रय लेकर उन्होंने रूमानी काव्य के घुटते घुटते वातावरण को जैसे एक ताजी हवा से आंदोलित कर दिया है। इसी अर्थ में उन्हें अंतिम रूमानी कवि मानना ठीक होगा। उन्हीं के बल पर अंग्रेजी काव्य परंपरा में रूमानियत का प्रदीप जैसे बुझने से पहले अपनी प्रखर प्रभा से प्रदीप्त हो उठा है। लेकिन अपनी काव्य-यात्रा में वे इस रूमानियत को छोड़कर बहुत आगे भी निकल गए थे।

ईट्स महत्त्वाकांक्षी कवि थे। देशाभिमानी होते हुए भी वे केवल आयरलैंड के कवि बनकर रह जाना नहीं चाहते थे। उनके सामने इटली के प्रख्यात कवि दांते का उदाहरण था जिन्हें पूरे योरोप के परिवेश में महान कवि माना गया है। ईट्स ने एक बार योरोपियन गीता लिखने की बात भी सोची थी किंतु वे जानते थे कि बड़ी (ग्रेट) अथवा श्रेष्ठ कविता बड़े युग में ही लिखी जाती है, जब युग किसी दृढ़ विश्वास अथवा आस्था से सुसबद्ध हो। दांते की 'डिवाइन कमिडी' के पीछे कैथलिक धर्म था और ईट्स के युग में ईसाई धर्म की रही-सही आस्था को भी डार्विन हक्सले, टिंडेल के वैज्ञानिक विचारों ने ढहा दिया था। विश्वास के कुछ आधारों की आवश्यकता उन्हें अपने यौवन में भी महसूस हुई थी। आगे चलकर उनकी यह धारणा दृढ़ होती गई कि जब तक योरोप की आस्था किसी सिस्टम, दर्शन सिद्धांत

अथवा धर्म में आबद्ध नहीं होती तब तक न उच्च कोटि का काव्य संभव है और न उच्च कोटि का जीवन।

और ऐसे ही सिस्टम की खोज अथवा स्थापना में उन्होंने कहाँ कहाँ की खाक नहीं छानी। आयरी किसानों का अंधविश्वास, मिस्मरिज्म, स्प्रिरिज्म, जादू-टोना प्राचीन यूनान और मिस्र के विचारक, मध्ययुगीन योरोपीय कामियागर, यहूदियों का कब्बाला भारतीय तंत्र, गीता उपनिषद् जर्मनी का ईसाई रहस्यवादी जैकब बहमन, स्वीडनबोर्ग, मैडेम ब्लावाट्स्की की थियोसोफी, रार्मानुराग आदि—क्या क्या उनके कौतूहल, शोध और अध्ययन के विषय नहीं रहे। ईट्स के इसी पक्ष को देखकर पाश्चात्य समालोचक अपना सिर धुनने लगता है। ईट्स को यह सब क्या सूझती थी! और मेरी यह धारणा है कि ईट्स की श्रेष्ठ कविता का बहुत बड़ा अंश इसी शोध के कारण संभव हो सका। ईट्स ने स्वयं इसे स्वीकार किया था। इसका प्रभाव तो निश्चित ही उनके काव्य पर है। प्रसंगवश मैं बता दूँ कि इसी को मैंने कैम्ब्रिज में अपने रिसर्च का विषय बनाया था—डब्ल्यू० बी० ईट्स ऐंड ओकल्टिज्म। कविता प्राय कवि का सीधा पकड़ नहीं होती कुछ अकविता को ओर हाथ बढ़ाते हुए शायद वह सहज ही उसके आलिंगन में आ जाती है। ईट्स गोपन रह स्यान और प्राप्त होती रही उनकी कविता।

ईट्स के इस शोध का सबसे बड़ी उपलब्धि थी, कवित्व की दृष्टि से प्रतीकों की समझदारी, उनपर अधिकार और नये-नये प्रतीकों को निर्मित करने की शक्ति। योरोप का समूचा आनन्द साहित्य—इसे साहित्य न कहना चाहूँगा, क्योंकि उसका एक रूढ़ अर्थ हो गया है—चिन्ता, स्पर्धा और प्रतीकों की गुह्य भाषा में है। आधुनिक समय में ईट्स प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों के शायद सबसे बड़े और सूक्ष्म कलाकार हैं। प्रतीकों का चुनाव, उन्हें साहित्य कला और संस्कृति की परंपरा से जोड़ना, उनके अर्थों को गहराई भरना और उन्हें नये-नये सन्दर्भों में प्रयुक्त करने में ईट्स ने जो काव्य कला की सफलता प्रदर्शित की है वह आगे विद्वानों के अनुसंधान का विषय है। इसके साथ ही उनके परवर्ती काव्य की अलंकारहीनता बौद्धिकता, बहिर्मुखता, यथार्थप्रियता और इनके द्वारा दिखावा के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का निर्जीव, निर्जीव, तथा यथार्थ स्वरों में व्यक्त करने की क्षमता ने उनकी वाणी को वह ओज दिया है जो किसी नदी का ही पकड़ा है और जिसकी ओर मैंने आरंभ में ही संकेत किया है। अब न जानने वालों की केवल ध्वनि से, मेरा ख्याल है, इन पंक्तियों में उस ओज का आभास पा सकेंगे।

> ऐंड माई फ़िश्चर माई फ्रेंड
> माई मार फ्लोटइनसाइड पाट
> ऐंड माई इन प्लेटोज टोप,
> डेथ ऐंड लाइफ़ वयर माट

दिल मन मेड अप द होल
मैड लाक, स्टार ऐंड बरेल
आउट आफ हिज बिटर सोल,
ए, सन ऐंड मून ऐंड स्टार, आल। (टावर)

पूछा जा सकता है कि उनके सिस्टम का क्या हुआ? अपनी मृत्यु के लगभग दस भर पूर्व उन्होंने उसे पूरा करके 'ए विजन' के रूप में दिया। इसका प्रशंसा करनेवाले और इसका मजाक उडानेवाले दोनों हैं। जाज रसल ने कहा था कि इसके एक एक पृष्ठ पर एक एक ग्रंथ लिखा जा सकता है। टी० एस० इलियट ने इसे 'लोअर माइथालोजी' कहा था—निम्नकोटि का दर्शनाभास। ईट्स ने उसके प्रकाशन के समय स्वयं कहा था कि 'मैं एक नये अहंनाम की उद्घोषणा करता हूं।' दुनिया ने उसे इस रूप में नहीं स्वीकार किया। पर ईट्स के व्यक्तित्व और उनके काव्य को समझने में इसकी महत्ता अधिकाधिक स्वीकार की जाने लगी है।

ईट्स के संबंध में कोई लेख, जो विशेषकर भारतीयों के लिए लिखा गया हो तब तक अपूर्ण ही रहेगा जब तक उसमें उनके भारत-संबंधों की चर्चा न हो। अपने यौवन काल में वे थियासोफिकल सोसाइटी के एक प्रमुख सदस्य मोहिनी चटर्जी के संपर्क में आए, प्रौढ़ावस्था में रवींद्रनाथ ठाकुर के और अपनी वृद्धावस्था में पुरोहित स्वामी के संपर्क में आए। पुस्तकों के द्वारा भी भारतीय दर्शन और काव्य से उनका घनिष्ठ परिचय था। मोहिनी चटर्जी अद्वैतवादी थे और उनके जगन्मिथ्या के उपदेश का ईट्स पर गहरा प्रभाव पड़ा। युगव्याप्त यथार्थता के विरुद्ध उनके मन में स्वप्निलता की जो प्रतिक्रिया उस समय हो रही थी उसे इस सिद्धांत से कुछ बल मिला होगा। उनकी बहुत सी प्रारंभिक रचनाओं पर मोहिनी चटर्जी के भारतीय विचारों की छाया है। मोहिनी चटर्जी पर भी उन्होंने एकाधिक कविताएँ लिखीं—एक तो उनसे मिलने के चालीस वर्ष बाद—कविता का शीर्षक ही है—मोहिनी चटर्जी।

रवींद्रनाथ ठाकुर से उनका परिचय 'गीतांजलि' के माध्यम से हुआ। उन्होंने उसके अनुवाद की पंक्ति-पंक्ति सुधारी थी। कुछ लोगों का ऐसा खयाल है कि यदि ईट्स ने अनुवाद को इतना सुन्दर और सुगठित न बना दिया होता तो शायद ही नोबेल प्राइज कमेटी का ध्यान 'गीतांजलि' की ओर जाता। ईट्स ने उसकी भूमिका भी लिखी थी। इंग्लैंड जाने पर गुरुदेव उनसे मिले थे। उनके 'पोस्ट आफिस' नाटक की भूमिका भी ईट्स ने लिखी थी। और एक बार उसका अभिनय अपने एबी थियेटर में कराया था। रवींद्रनाथ ठाकुर का प्रभाव विशेष उनपर नहीं पड़ा। ईट्स को प्रायः रवींद्र सा ही रहस्यवादी समझ लिया जाता है। यह बिलकुल भ्रामक है। ईट्स में वह समर्पण की भावना नहीं, जो रवि बाबू का मूल स्वर है। ईट्स का मूल स्वर है संघर्ष—यह जानते हुए भी संघर्ष, कि अंत में मनुष्य को

पराजित ही होना है—यानी ट्रैजिडी की सोल्लास स्वीकृति।

पुरोहित स्वामी १९३० के लगभग इंग्लैड पहुँचे थे और ईट्स के जीवन पर्यंत उनके मित्र बने रहे। ईट्स ने उनकी तीन पुस्तकों की भूमिकाएँ लिखीं। उनके साथ मिलकर दस उपनिषदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। पुरोहित स्वामी ने 'गीता' अनूदित कर ईट्स को समर्पित की। 'ए विजन' के कुछ विचार निश्चय ही पुरोहित स्वामी से मिले होंगे। अपने अंतिम नाटक के लिए ईट्स ने स्वयं लिखा था कि वह "कथा रूप में पुरोहित स्वामी की फिलोसाफी है।" ईट्स अपने अंदर दार्शनिक और कवि का संघर्ष बहुत पहले से अनुभव करते थे। पुरोहित स्वामी के संपर्क में यह संघर्ष और बढ़ा, पर अंत में ईट्स के कवि की ही विजय हुई, लेकिन कवि ऐसा जिसमें दार्शनिक की भी निरपेक्षता आ गई हो।

ईट्स के कवि का निर्माण जिन तत्वों से हुआ था और उसका विकास जिस जिस क्रम से हुआ उसका अध्ययन बड़ा ही मनोरंजक और रोचक है। ईट्स, इसमें सन्देह नहीं, जन्मजात और अद्भुत प्रतिभा के कवि थे। अनुभव और अध्ययन में आए हुए कितने ही असंगत और परस्पर विरोधी को काव्य का सामंजस्य प्रदान करने की उनमें विचित्र क्षमता थी। हमें इस बात का थोड़ा हर्ष और अभिमान होना स्वाभाविक है कि इतने बड़े कवि के निर्माण में भारत और उसके दर्शन-काव्य ने भी कुछ योगदान किया था।

ईट्स की मृत्यु द्वितीय महायुद्ध से कुछ पूर्व हो गई थी। उन्हें इसका आभास हो गया था कि दुनिया किसी संहार की ओर जा रही है, लेकिन यदि संहार ही नियति है तो उसका कायर की तरह नहीं वीर की तरह जाना चाहिए पुनर्निर्माण का संकल्प लेकर जाना चाहिए यही उनका मूल सन्देश था।

> आल थिंग्स फ़ाल ऐंड आर बिल्ट अगेन
> ऐंड दोज दैट बिल्ड देम अगेन आर गे।—
> गैइटी ट्रांसफिगरिंग आल दैट ड्रेड।
> (सभी वस्तुएँ ध्वस्त हुआ करती हैं फिर निर्मित की जातीं
> और उन्हें जो फिर से निर्मित करते हैं हर्षित होते हैं।—
> हर्ष ध्वंस की विभीषिका को सृजन-स्वप्न में परिणत करता)

१०-६-६५

परिशिष्ट–२

प्रश्न परिचर्चा

(प्रश्नकर्ता—दिनकर सोनवलकर)

प्रश्न—ईट्स की कविताओं के अनुवाद की योजना कब बनी? आपने ईट्स का चुनाव महज़ अपने शोधकार्य के कारण किया अथवा उनकी काव्यात्मक विशेषताओं के आधार पर?

उत्तर—पहली बार ईट्स की कविताओं का अनुवाद मैंने १९५६ में किया। पन्तजी ने रेडियो के छंद-बद्ध-कार्यक्रम के अन्तर्गत पाँच छः कविताओं का अनुवाद मुझसे कराया था जो बाद को प्रसारित हुए। इससे पूर्व, मुझे तो नहीं मालूम कि ईट्स की कविताओं का कोई अनुवाद किसी ने किया हो। मैं हिन्दी की ही बात कर रहा हूँ। भारत की अन्य भाषाओं में उनकी कविताओं के अनुवाद इससे पहले हुए हों तो मैं नहीं जानता। कुछ अनुवाद मैंने बाद को किए—शायद '५८-'५९ में। ज्यादातर अनुवाद मैंने इसी वर्ष किए जब मेरा ध्यान सहसा इस ओर गया कि यह ईट्स का जन्म-शताब्दी का वर्ष है। मेरी इच्छा हुई कि इसी वर्ष ईट्स पर लिखा मेरा शोधप्रबन्ध भी प्रकाशित हो जाए और ईट्स की कविताओं के मेरे अनुवाद का एक संग्रह भी। शोधप्रबन्ध W B Yeats & Occultism प्रायः छप चुका है। अब तक मैं ईट्स की १०१ कविताओं का अनुवाद कर चुका हूँ। आशा करता हूँ कि यह संग्रह भी '६५ के भीतर भीतर छप जाएगा।

ईट्स की काव्यात्मक विशेषताओं से प्रभावित होकर ही मैंने उनको अपने विशेष अध्ययन का विषय बनाया था। शोध नीरस काम होता है, पर मैंने उनकी कविताओं में आनंद लेकर उसे किसी हद तक सरस बना लिया था। ईट्स के प्रति जो कविता मैंने लिखी है उसमें इसका संकेत है। मुझे लगा कि ईट्स के काव्य का गहराई से अध्ययन करने, उसे किसी हद तक समझने के कारण मैं उसे अनूदित करने का अधिकारी हूँ। अनधिकार चेष्टा करने में मुझे संकोच ही होता है—डर भी लगता है। सफलता का मेरी क्षमता से सीमित होना स्वाभाविक है।

प्रश्न—कविताओं के चुनाव में कौन-सा दृष्टिकोण रहा है? ईट्स की कविता

स्वर के साथ सम्मिश्रण किया। हमारे यहाँ प्रयोगवाद के साथ बौद्धिकता आई और नई कविता के साथ अधोमुखी हो फ्रायडीय हो गई। हमारे अधिकतर नए कवि अवचेतन की खान से बिंब, चित्र, प्रतीक, रूपक खोद-खोदकर बाहर निकालने में लगे हुए हैं। इसकी तुलना एज़रा के प्रारंभिक imagist movement के साथ की जा सकती है।

प्रश्न—अपनी अनुवाद प्रक्रिया तथा अनुवाद की कठिनाइयों के संबंध में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य बतलाने की कृपा करें।

उत्तर—रुबाइयात उमर खैयाम से आरंभ करके अब तक के मेरे अनुवादों में पर्याप्त विविधता है। अनुवाद प्रायः मैंने उन्हीं रचनाओं का किया है जो मुझे प्रिय हैं। उनको अपनी भाषा में रखकर मैंने उनके साथ अधिक निकटता का अनुभव करने का प्रयत्न किया है। शब्द-शब्द, पंक्ति-पंक्ति विचार और भाव शृंखला को पकड़े हुए किसी महान लेखक की रचना प्रक्रिया का अनुसरण करना इतना रोमांचक अनुभव है कि उसे तन्मय अनुवादक ही जान सकता है। प्रयत्न तो मेरा यही रहा है कि मूल लेखक से तन्मय हो सकूँ—उसकी सृजन मनस्थिति से। ऐसा संभव होने पर अनुवाद सहज हो जाता है। यहाँ तक कि शाब्दिक सीमाएँ टूट जाती हैं और अनुवादक स्वतंत्र सर्जक के अधिकार से अपना काम करने लगता है। शाब्दिकता अनुवाद की सबसे निचली श्रेणी है। इसपर पाँव जमाए रहने का आग्रह मेरा कभी नहीं रहा। शब्द जिसके उपकरण या साधन हैं उसे पकड़ने, आत्मसात करने और फिर उसे अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयत्न मैंने किया है। अनुवाद के लिए आदर्श तो यही है कि वह अनुवाद न मालूम हो। मेरी सफलता मेरी क्षमता से सीमित है।

प्रश्न—क्या सचमुच अनुवाद का कोई साहित्यिक मूल्य है अनुवादित भाषा के इतिहास में? (अर्थात हिंदी के इतिहास में)

उत्तर—निश्चय विशेषकर विकासोन्मुख भाषाओं के इतिहास में। हिन्दी ऐसी ही भाषा है। अनुवाद से भाषाओं की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ती है। भाव विचार के नए केन्द्र खुलते हैं। मूल्यवान अनुवादों से सर्जनशील साहित्य निश्चित रूप से प्रभावित होता है। अनुवाद किसी भाषा का दूसरी भाषा की ओर मैत्री का हाथ है—वह जितनी बार और जितनी दिशाओं में बढ़ाया जा सके बढ़ाया जाना चाहिए। सहयोग-सहकारिता भाषा के विकास के लिए भी आवश्यक है—भाषा में साहित्य भी सन्निहित है।

व्यक्तिगत रूप से लेखक की सर्जन-साधना में भी अनुवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्यकार प्रभावित होगा तो साहित्य कैसे नहीं होगा।

प्रश्न—हिंदी के नए अनुवादकों को आपकी सलाह?

उत्तर—सलाह देने का सबसे अच्छा उपाय है उदाहरण उपस्थित करना। मैंने

अपनी योग्यता क्षमता के अनुसार इस दिशा म जो कुछ किया है उसे आप चाह ता उदाहरण समझ लें। त्रुटिपूर्ण उदाहरणा में भी कुछ सीखा जा सकता है।

प्रश्न—अन्य कोई बात जो आपकी दृष्टि मे महत्वपूर्ण हो उपयुक्त सदर्भ में।

उत्तर—मैं चाहता हूँ हिन्दी का अनुवाद साहित्य बहुत बहुत-बहुत बढ़े। उसम प्रातीय साहित्य, एशियायी साहित्य, यारोपीय साहित्य, विश्व साहित्य म जो कुछ श्रेष्ठ हा सब अनूदित होकर आए। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे लखका को अपनी भाषा के अतिरिक्त एकाधिक भाषाओं का पूरा ज्ञान हो जिसम से वे उत्तम रचनाओं का अनुवाद करते रहें। अच्छा अनुवादक भी वही होता है जो अच्छा मौलिक लेखक हो।

१८–८–६५

○ ○ ○

अपनी योग्यता क्षमता के अनुसार इस दिशा में जो कुछ किया है उसे आप चाहें तो उदाहरण समझ लें। त्रुटिपूर्ण उदाहरणों से भी कुछ सीखा जा सकता है।

प्रश्न—अन्य कोई बात जो आपकी दृष्टि में महत्त्वपूर्ण हो उपयुक्त सन्दर्भ में।

उत्तर—मैं चाहता हूँ हिन्दी का अनुवाद साहित्य बहुत-बहुत-बहुत बढ़े। उसमें भारतीय साहित्य, एशियायी साहित्य, यूरोपीय साहित्य, विश्व साहित्य में जो कुछ श्रेष्ठ हो सब अनूदित होकर आए। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे लेखकों को अपनी भाषा के अतिरिक्त एकाधिक भाषाओं का पूरा ज्ञान हो जिनमें से वे उत्तम रचनाओं का अनुवाद करते रहें। अच्छा अनुवादक भी वही होता है जो अच्छा मौलिक लेखक हो।

१८-८-६५

० ० ०